सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 184 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, सोमवार 10 अगस्त, 2026
मूल्य ₹ 3/-

हमेशा ध्यान में रखिये की आपका सफल होने का संकल्प किसी भी और संकल्प से महत्वपूर्ण है।
-अब्राहम लिंकन

सुदर्शन की जगह सरफराज की टीम... 7 | राजस्थान निकाय-पंचायत चुनाव... 3 | भाजपा सरकार में फर्जीवाड़ा चरम... 2

दुश्मन न करे, दोस्त ने वो काम किया...

योगी के गढ़ में राज्यपाल का आईना, यूनिवर्सिटी की इमारत से हॉस्टल की थाली तक सवाल

» तीन महीने का अल्टीमेटम
» छात्र पहले से ही आंदोलनरत है ऐसे में आनंदीबेन पटेल का वक्तव्य आग में घी का करेगा काम

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सियासत में सबसे खतरनाक सवाल वह नहीं होता जो विपक्ष पूछे। सबसे खतरनाक सवाल वह होता है जो अपने घर से उठे। क्योंकि विपक्ष का सवाल तो सत्ता की फाइल में राजनीतिक आरोप लिखकर दबा दिया जाता है। लेकिन जब राजभवन की आवाज मुख्यमंत्री के अपने गढ़ में व्यवस्था का हिसाब मांगने लगे तो फिर सूबे के राजनीतिक महौल का गर्म हो जाना स्वाभाविक है।

यूपी की राजनीति में यदि योगी सरकार की बात करें तो कभी संगठन में खटपट तो कभी सरकार में विरोधाभास की खबरें मीडिया की हेडलाइन बनती है। ऐसे में सूबे का मुखिया गवर्नर यदि किसी सार्वजनिक मंच से अपनी ही सरकार की कमियां गिनाने लगे वह भी मुख्यमंत्री के होम टाउन से तो फिर यह कोई आक्सिमक घटना नहीं रह जाती। घटना संकेत बन जाती है आने वाले कल की बड़ी राजनीतिक करवट की।

अपने ही घर से आई चिट्ठी इसी को कहते हैं सियासत

लेकिन यही से अगर राजभवन कहे पहले इसे ठीक कीजिए तो सवाल सिर्फ विश्वविद्यालय की दीवारों का नहीं रह जाता। सवाल बन जाता है दीवारों पर रंग चढ़ा है या व्यवस्था पर भी? राज्यपाल ने विश्वविद्यालय को तीन महीने में कमियां दूर करने का समय दिया है। लड़कों के हॉस्टलों में मेस व्यवस्था को लेकर भी सवाल उठे और बाहर से आने वाले टिफिन के जरिए नशीले पदार्थ पहुंचने की आशंका तक जताई गई। यानी जिस शिक्षा व्यवस्था को सरकार युवा पीढ़ी के भविष्य की प्रयोगशाला बताती है वहां अब राजभवन को यह देखना पड़ रहा है कि छात्र खाना कहां से खा रहे हैं और टिफिन के साथ कुछ और तो नहीं पहुंच रहा!

ऐसे ही कुछ तब, हुआ जब...

मंच था दीक्षांत समारोह का। सामने डिग्रियां थीं मेडल थे उपलब्धियों की चमक थी और विश्वविद्यालय की शैक्षणिक तरक्की के दावे थे। लेकिन इसी चमक के बीच राज्यपाल और कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने ऐसा आईना सामने रख दिया कि चमक के पीछे की धूल दिखाई देने लगी। सवाल विश्वविद्यालय की इमारतों पर उठा। सवाल निर्माण की गुणवत्ता पर उठा। सवाल हॉस्टलों की व्यवस्थाओं पर उठा। सवाल छात्रों के भोजन तक पहुंच गया। और बात यहां तक पहुंची कि राज्यपाल ने कहा कि अगर मुख्यमंत्री के शहर में ही भ्रष्टाचार या ऐसी कमियां हैं तो प्रदेश के बाकी हिस्सों में क्या हो रहा होगा? अब जरा इस एक सवाल की टाइमिंग समझते हैं। यह कोई साधारण जिला नहीं है। यह गोरखपुर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की राजनीतिक पहचान का सबसे मजबूत भूगोल। वह शहर जहां से योगी की राजनीति ने लंबी छलांग लगाई जहां उनका प्रभाव किसी परिचय का मोहताज नहीं और जहां सरकार की उपलब्धियों का माडल पेश करना सत्ता के लिए सबसे आसान होना चाहिए।

जल्द से जल्द सुधार की चेतावनी दी

राज्यपाल ने सुधार के लिए तीन महीने का समय दिया है। यानी कहानी पूरी तरह से खत्म नहीं हुई बल्कि असल कहानी अब शुरू हुई है क्योंकि तीन महीने बाद सवाल पूछा जा सकता है कि क्या निर्माण की गुणवत्ता सुधरी? क्या हॉस्टल व्यवस्था सुधरी? क्या भोजन की गुणवत्ता की स्वतंत्र जांच हुई? क्या छात्रों की सुरक्षा को लेकर व्यवस्थाएं बेहतर हुईं? और सबसे बड़ा सवाल क्या राजभवन की आपत्तियों पर विश्वविद्यालय प्रशासन ने सिर्फ जवाब दिया या वास्तव में बदलाव किया?

राजभवन ने विपक्ष का काम कर दिया

विपक्ष वर्षों से सरकार पर शिक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल उठाता रहा है। कांग्रेस हो चाहे सपा दोनों ही प्रमुख विपक्षी पार्टियों ने कभी यूपी के विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता पर सवाल उठाये तो कभी नियुक्तियों पर हमला बोला। कभी फीस पर सवाल कभी भर्ती पर सवाल कभी छात्र आंदोलनों पर सवाल। विपक्ष के इन सवालों के जवाब सरकार ने हमेशा यह कह कर दिये कि विपक्ष राजनीति कर रहा है। लेकिन अब अगर वही व्यवस्था संबंधी सवाल राजभवन से उठे तो जवाब किस खाते में जाएगा यही राजनीति का यही सबसे मजेदार मोड़ है। विपक्ष आरोप लगाए तो राजनीति। राज्यपाल सवाल पूछें तो प्रशासनिक समीक्षा लेकिन जनता दोनों को जोड़कर देखती है। यही वजह है कि समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने राज्यपाल की टिप्पणियों को आधार बनाकर सरकार पर हमला बोला है यानी जिस मुद्दे को विश्वविद्यालय प्रशासन शायद स्थानीय समस्या मानकर निपटाना चाहता था उसने कुछ ही घंटों में राजनीतिक रंग ले लिया। गौरतलब है कि चुनावी मौसम में रंग भले ही जल्दी उतर जाएं लेकिन आरोपों नहीं उतरते बल्कि उन्हें राजनीतिक चूल्हे पर लगातार उस वक्त तक गर्म किया जाता है जबतक चुनाव न हो जाए। यूपी की राजनीतिक की समझ रखने वाले इस पूरे प्रकरण पर यही कह रहे हैं कि चुनाव में यह आरोप जरूर असर दिखाएंगे क्योंकि इन आरोपों को किसी साधारण व्यक्ति ने नहीं लगाया है।

सत्ता के भीतर सवाल और बाहर विपक्ष मुखर

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव 2027 में होने हैं। राजनीतिक तैयारी और समीकरणों का दौर शुरू हो चुका है। सत्ता के भीतर संगठन को लेकर खींचतान की खबरें समय-समय पर सामने आती रही हैं। मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्रियों के बीच मतभेदों को लेकर भी राजनीतिक चर्चाएं होती रही हैं।
यही कारण है कि ऐसे समय में राज्यपाल का गोरखपुर दौरा और वहां से सरकार की व्यवस्थाओं पर सवाल उठना राजनीतिक रूप से ज्यादा ध्यान खींचता है। क्योंकि चुनाव से पहले सरकार को सिर्फ विपक्ष नहीं घेरता। सरकार को अपने प्रदर्शन का रिपोर्ट कार्ड भी घेरता है। और अगर रिपोर्ट कार्ड किसी विरोधी दल के हाथ में हो तो सत्ता उसे राजनीतिक हमला कह सकती है। लेकिन अगर रिपोर्ट कार्ड राजभवन की मेज पर पहुंच जाए तो फिर बहस थोड़ी गंभीर हो जाती है।

भाजपा सरकार में फर्जीवाड़ा चरम पर: अखिलेश

सपा प्रमुख बोले- प्रदेश में फर्जी पुलिस और अवैध थाने, फर्जी मुकदमे और एनकाउंटर आम बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव का बीजेपी पर हमला जारी है। सपा प्रमुख ने कहा कि भाजपा सरकार में फर्जीवाड़ा भी चरम पर है। फर्जी मुकदमे, फर्जी एनकाउंटर और नकली सिरप की घटनाएं तो हो ही रही हैं, इस सरकार में फर्जी पुलिस और अवैध थाने भी सामने आ गए हैं।

अखिलेश ने जारी बयान में कहा कि भाजपा सरकार ने प्रदेश की कानून व्यवस्था को बर्बाद कर दिया है। अपराधी बेखौफ हैं। सरकार में महिलाओं व बेटियों पर अत्याचार नहीं थम रहा है। महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों और साइबर क्राइम में उत्तर प्रदेश सबसे ऊपर है। उन्होंने कहा कि लखीमपुर खीरी में दलित युवती की दुष्कर्म के बाद हत्या की बेहद दर्दनाक घटना हुई।

पिछले दिनों लखनऊ के पारा थाना क्षेत्र के नरपत खेड़ा में 17 वर्षीय बीसीए की छात्रा की गला रेतकर हत्या हो गई। इसी सप्ताह बख्शी का तालाब क्षेत्र में एक युवक का शव मिला, उसकी हत्या कर दी गई। उत्तर प्रदेश की बहन बेटियों को इस महिला विरोधी सरकार में कभी न्याय नहीं मिल सकता। कानून व्यवस्था और अपराध पर सरकार का जीरो टॉलरेंस का दावा झूठा है।

सपा ने पीडीए पंचायत का किया आयोजन

राजधानी लखनऊ में नगराम के समेसी में शनिवार को समाजवादी पार्टी द्वारा पीडीए पंचायत का आयोजन किया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में समाजवादी पार्टी की महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष सीमा राजभर ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने केंद्र व राज्य की भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि इस सरकार में चंदा चोरी, नीट पेपर लीक की शर्मनाक घटनाएं हुई हैं । अगली सरकार समाजवादी पार्टी की बनेगी। इसके लिए सभी बूथ स्तर पर सपा संगठन को सक्रिय व मजबूत करना होगा। पंचायत में सांसद आर के चौधरी, जिला अध्यक्ष जय सिंह जयंत, विधानसभा क्षेत्र अध्यक्ष उमाशंकर वर्मा, पूर्व विधायक अंबरीष पुष्कर, अधिवक्ता सभा के सचिव श्रवण कुमार यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

सपा एमएलसी के फेक हस्ताक्षर कर विधान परिषद में लगा फर्जी सवाल

उत्तर प्रदेश विधान परिषद में सपा एमएलसी मुकुल यादव के फर्जी हस्ताक्षर कर स्वास्थ्य विभाग से संबंधित सवाल लगा दिया गया। परिषद ने स्वास्थ्य विभाग से आख्या भी तलब कर ली। इस बीच मुकुल यादव के ही अन्य सवालों के पत्रों में उनके हस्ताक्षर अलग मिले तो एमएलसी से पुष्टि की गई। एमएलसी ने संबंधित सवाल लगाने से इन्कार किया। आनन-फानन परिषद सभापति ने मामले की जांच शुरू करा दी। सपा के विधान परिषद सदस्य (एमएलसी) मुकुल यादव के हस्ताक्षर से पांच अगस्त को विधान परिषद में नियम 111 (लोक महत्व का प्रश्न) के तहत पत्र दिया गया। इसमें बताया गया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के कर्मचारियों के लिए सुबह 9:45 बजे कार्यालय आना अनिवार्य है। कंप्यूटर ऑपरेटर, प्रोग्राम असिस्टेंट, कंसल्टेंट व अन्य संविदा कर्मियों के एक मिनट भी देर से आने पर आधे दिन का वेतन काट लिया जाता है। वहीं, महाप्रबंधक, उपप्रबंधक, वित्त नियंत्रक व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों पर घंटों देर से आने के बाद भी कार्रवाई नहीं होती। विधान परिषद ने उसी दिन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग से प्रकरण में आख्या तलब कर ली। पत्र मिलते ही विभाग में हलचल मच गई और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की निदेशक डॉ. पिंकी जोएल को पत्र भेजा गया। विभाग ने एमएलसी मुकुल यादव से पूछा तो पता चला कि यह सवाल उन्होंने लगाया ही नहीं है।

क्रांतिकारियों को किया नमन

सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिलाने वाले काकोरी ट्रेन एक्शन की वर्षगांठ पर सभी क्रांतिकारियों को नमन किया है। उनकी ओर से सपा के जिलाध्यक्ष जयसिंह जयंत ने काकोरी स्थित शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

बसपा ने यूपी विस-27 चुनाव की शुरु की तयारी

- आकाश आनंद का हाथरस सादाबाद में सभा
- प्रत्याशी के नाम पर भी लग सकती है मुहर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सादाबाद (हाथरस)। बहुजन समाज पार्टी ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 की तैयारियों को धार देने के लिए सादाबाद को अपनी पहली बड़ी चुनावी जमीन बनाया है। सोमवार को होने वाले विधानसभा स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन को बसपा के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर आकाश आनंद संबोधित करेंगे। इसके साथ ही पार्टी के मिशन-2027 का औपचारिक चुनावी आगाज माना जा रहा है।

पार्टी ने सम्मेलन को बड़ा रूप देने की तैयारी की है और करीब 10 हजार कार्यकर्ताओं के जुटने का दावा किया जा रहा है। आकाश आनंद का पहली बार सादाबाद में संबोधन होना है। इससे पहले लोकसभा चुनाव -2024 में लोकसभा चुनाव के दौरान उन्होंने हाथरस में चुनावी सभा को संबोधित किया था। अब विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बीच उनकी सादाबाद में मौजूदगी को बसपा की बदली चुनावी रणनीति के अहम संकेत के तौर पर देखा जा रहा है। सम्मेलन में वह कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर तक संगठन मजबूत करने, मतदाताओं से सीधा संपर्क बढ़ाने और चुनाव के लिए पूरी ताकत से जुटने का संदेश दे सकते हैं। सम्मेलन को लेकर उत्सव गार्डन में व्यापक तैयारियां की गई हैं। यहां सभा सुबह 11 बजे शुरू होगी।

करीब 2200 वर्ग गज क्षेत्रफल में भव्य पंडाल तैयार किया गया है। इसमें कार्यकर्ताओं के बैठने, मंच, प्रवेश और अन्य व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया गया है। पार्टी पदाधिकारियों के मुताबिक पंडाल को आधुनिक तकनीक के साथ तैयार किया गया है। बसपा जिलाध्यक्ष राजकपूर ने बताया कि सम्मेलन में करीब 10 हजार कार्यकर्ताओं के पहुंचने की संभावना है। इसके लिए जनपद स्तरीय टीम कई दिनों से गांव-गांव संपर्क अभियान चला रही है। विधानसभा क्षेत्र के अलग-अलग हिस्सों से कार्यकर्ताओं और समर्थकों को सम्मेलन में पहुंचने के लिए जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

रविवार को पूर्व सांसद और मुख्य मंडल प्रभारी अलीगढ़ मंडल बाबू मुनकाद अली ने भी उत्सव गार्डन पहुंचकर तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने मंच, पंडाल, कार्यकर्ताओं के बैठने, प्रवेश स्थल समेत अन्य व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सम्मेलन की राजनीतिक अहमियत इसलिए भी बढ़ गई है कि सादाबाद विधानसभा क्षेत्र से बसपा के संभावित प्रत्याशी को लेकर चर्चाएं तेज हैं। पार्टी के भीतर डॉ. अविन शर्मा का नाम सबसे अधिक चर्चा में है। माना जा रहा है कि आकाश आनंद सम्मेलन के मंच से उनके नाम की घोषणा कर सकते हैं। पार्टी की ओर से अभी तक इस संबंध में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।

पहली बड़ी सभा, संदेश बड़ा

बसपा के लिए सादाबाद का चयन महज एक विधानसभा सम्मेलन तक सीमित नहीं माना जा रहा। पार्टी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपने पुराने प्रभाव वाले इलाकों में संगठन को फिर सक्रिय करने की कोशिश में है। हाथरस जिला कभी बसपा की मजबूत राजनीतिक जमीन रहा है। ऐसे में सादाबाद से चुनावी अभियान की शुरुआत कर पार्टी कार्यकर्ताओं में नया उत्साह पैदा करने और पुराने समर्थक वर्ग को दोबारा सक्रिय करने का प्रयास कर रही है।

समाज में आज भी मौजूद है सामंती सोच: तेजस्वी यादव

- मजदूर की हत्या पर नेता प्रतिपक्ष ने सरकार पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रोहतास। रोहतास जिले के दिनारा प्रखंड के जोगिया गांव में मजदूर की हत्या के बाद अब मामला राजनीतिक रंग लेता नजर आ रहा है। बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव मृतक के परिजनों से मिलने जोगिया गांव पहुंचे। उन्होंने परिवार से मुलाकात कर घटना की पूरी जानकारी ली और आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के साथ पीड़ित परिवार को सुरक्षा देने की मांग की। इस दौरान तेजस्वी यादव ने राज्य सरकार पर भी जमकर निशाना साधा।

पीड़ित परिवार से मुलाकात के बाद तेजस्वी यादव ने कहा कि समाज में आज भी सामंती सोच रखने वाले लोग मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि जिस तरह अपना हक मांगने गए एक मजदूर की गोली मारकर हत्या कर दी गई, वह बेहद दुखद है। तेजस्वी यादव ने सरकार से दोषी को सख्त से सख्त सजा दिलाने और पीड़ित परिवार को सुरक्षा उपलब्ध कराने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि हत्यारे की ओर से अब भी पीड़ित परिवार को जान से मारने की धमकी दी जा रही है। दिनारा प्रखंड के जोगिया गांव में बीते बुधवार को 60 वर्षीय चंदेश्वर चौधरी की कथित तौर पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। घटना दिनदहाड़े हुई थी। हत्या का आरोप गांव के ही रहने वाले अजीत तिवारी पर लगा। आरोप है कि वारदात के बाद आरोपी शव को लेकर फरार हो गया था।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

इतिहास को राजनीतिक चश्मे से न देखें सीएम: पाल

- काकोरी शहीदों को कांग्रेस का नम के बयान किया पलटवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस के प्रभारी प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने यूपी सीएम योगी को घेरा हैं। कांग्रेस भारी ने योगी के उस बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए, जिसमें उन्होंने कहा था कि शहीदों के खिलाफ मुकदमा लड़ने वाले कांग्रेसी थे, गौतम ने कहा कि आज जरूरत इतिहास को राजनीतिक चश्मे से देखने की नहीं, बल्कि महान क्रांतिकारियों के बलिदान से प्रेरणा लेने की है।

कांग्रेस काकोरी ट्रेन एक्शन की 101वीं वर्षगांठ पर रविवार को काकोरी स्थित शहीद स्मारक देशभक्ति और श्रद्धा का केंद्र बना रहा।

कांग्रेस के उत्तर प्रदेश प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम और प्रदेश अध्यक्ष अजय राय जिला अध्यक्ष रुद्र दमन सिंह और बड़ी संख्या में पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं के साथ शहीद स्मारक पहुंचे। कांग्रेस नेताओं ने काकोरी ट्रेन एक्शन के अमर क्रांतिकारियों को पुष्प अर्पित कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। इस दौरान कांग्रेस नेताओं ने कहा कि काकोरी की धरती भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में विशेष महत्व रखती है। यहां के क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष करते हुए देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उनके बलिदान को देश हमेशा याद रखेगा और आने वाली पीढ़ियों को भी उनके संघर्ष से प्रेरणा लेनी चाहिए। सीएम योगी के बयान पर राजेंद्र पाल गौतम का पलटवार श्रद्धांजलि के बाद कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने मीडिया से बातचीत की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उस बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए, जिसमें उन्होंने कहा था कि शहीदों के खिलाफ मुकदमा लड़ने वाले कांग्रेसी थे, गौतम ने कहा कि आज जरूरत इतिहास को राजनीतिक चश्मे से देखने की नहीं, बल्कि महान क्रांतिकारियों के बलिदान से प्रेरणा लेने की है।

देश में फिर बनेगा चुनावी माहौल

राजस्थान निकाय-पंचायत चुनाव की तैयारी

- भाजपा-कांग्रेस की सीधी लड़ाई
- तीसरे मोर्चे की दस्तक क्या बदलेगा चुनावी गणित
- प्रदेश के करीब 11 हजार शहरी वार्ड तथा 14 हजार पंचायत इकाइयों में संगठन सक्रिय
- छोटे दलों की एंट्री से बदलेगा चुनावी समीकरण

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। देश फिर के चुनावी जंग को देखने को तैयार हो जाए। ये विस, लोस, रास या कोई उपचुनाव नहीं है। ये राजस्थान के निकाय और पंचायत चुनाव चुनाव। एकबार फिर भाजपा की अग्निपरीक्षा होगी और कांग्रेस की ताकत कितनी बढ़ रही है सका आंकलन होगा। उधर ओबीसी आरक्षण संबंधी रिपोर्ट सीएम भजन लाल को सौंप दी गई है। दोनों ही प्रमुख दलों ने अपने तीर-तरकश कसने शुरूकर दिए हैं। हालांकि ऐसी चर्चा भी हो रही है कि इस बार बहुकोणीय होने जा रहे हैं।

बीजेपी, आप, एआईएमआईएम व आरपीआई की सक्रियता से कई सीटों पर मुकाबला दिलचस्प होने की संभावना है। राजस्थान में पंचायत राज और नगरीय निकाय चुनाव की औपचारिक तैयारियां शुरू होते ही सियासी बिसात भी बिछने लगी है। ओबीसी आयोग ने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंप दी है। सीएम भजनलाल शर्मा आज इस रिपोर्ट को लेकर दिल्ली गए हैं। अब तक बीजेपी और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला माने जाने वाले स्थानीय चुनाव इस बार बहुकोणीय होते दिखाई दे रहे हैं। बहुजन समाज पार्टी (बसपा), असदुद्दीन ओवैसी की ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन, आम आदमी पार्टीऔर रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (अठावले) ने चुनाव मैदान में उतरने का ऐलान कर दिया है। ऐसे में मुकाबला केवल सीटों का नहीं, बल्कि दलित, मुस्लिम और शहरी वोट बैंक में सेंध लगाने की रणनीति का भी होगा।

मतदाताओं के पास विकल्प बढ़ेंगे, लेकिन मुकाबला पहले की तुलना में ज्यादा बिखरा हुआ होगा

राजनीतिक विश्लेषककहना है कि पंचायत और निकाय चुनाव भले स्थानीय मुद्दों पर लड़े जाते हों, लेकिन ये प्रदेश की राजनीतिक दिशा का भी संकेत देते हैं। उनके मुताबिक अधिक दलों के मैदान में उतरने से मतदाताओं के पास विकल्प बढ़ेंगे, लेकिन मुकाबला पहले की तुलना में ज्यादा बिखरा हुआ भी हो सकता है। उनका कहना है कि एआईएमआईएम के चुनाव लड़ने से मुस्लिम वोटों का बंटवारा हो सकता है, जो अब तक बड़े पैमाने पर कांग्रेस के साथ जाते रहे हैं। वहीं बसपा और भाजपा की सहयोगी आरपीआई-अठावले के सक्रिय होने से दलित वोटों पर भी नई प्रतिस्पर्धा देखने को मिल सकती है, खासकर पूर्वी राजस्थान में। यदि दोनों दल आक्रामक तरीके से चुनाव लड़ते हैं तो कई सीटों पर दलित मतों का विभाजन चुनावी नतीजों को प्रभावित कर सकता है।

बीजेपी बोली हम पर जनता का भरोसा कायम

उधर बीजेपी ने भी विपक्ष और नए दलों के दावों को खारिज किया है। भाजपा के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता रामलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान की जनता का डबल इंजन सरकार पर अटूट विश्वास है। उन्होंने कहा, चाहे कितनी भी पार्टियां चुनाव मैदान में उतर जाएं, राजस्थान की जनता भाजपा के साथ खड़ी है। चुनाव में कौन लड़ रहा है और कितनी पार्टियां लड़ रही हैं, इससे भाजपा की चुनावी संभावनाओं पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

आम आदमी पार्टी भी पूरी ताकत से ताल ठोंकेगी

आम आदमी पार्टी ने भी राजस्थान के सभी नगरीय निकाय चुनाव पूरे दमखम के साथ लड़ने का ऐलान किया है। पार्टी की प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष कीर्ति पाठक ने कहा कि आप पारदर्शिता, जवाबदेही और भ्रष्टाचार मुक्त नगर प्रशासन को मुख्य मुद्दा बनाकर चुनाव लड़ेगी। जयपुर जिला अध्यक्ष अमित दाधीच ने बताया कि संगठन को बूथ और वार्ड स्तर तक मजबूत किया जा रहा है। सड़क, सफाई, पेयजल, सीवरेज, ड्रेनेज और स्ट्रीट लाइट जैसे स्थानीय मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाया जाएगा।

बीएपी पहली बार वागड़ से आगे निकलेगी

वागड़ में मजबूत पकड़ रखने वाली भारत आदिवासी पार्टी भी इस बार चित्तौड़गढ़, झालवाड़, भीलवाड़ा, सिरोही, जालौर, पाली और बाड़मेर में भी चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही है। बीएपी के कंवीनर व डूंगरपुर-बांसवाड़ा सांसद राजकुमार रोत का कहना है कि पिछले जिला परिषद चुनावों में डूंगरपुर में बीएपी के सदस्यों का बहुमत था लेकिन कांग्रेस के सदस्यों का बीजेपी को समर्थन दिए जाने के चलते चेयरमैन बीजेपी का बना। उन्होंने कहा कि इस बार पार्टी राजस्थान के अन्य हिस्सों में भी चुनाव लड़ने के विकल्प तलाश हरी है।

'भाजपा के साथ गठबंधन में उतरेगी आरपीआई'

केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री रामदास अठावले ने जयपुर में कहा कि भाजपा के साथ सीटों के बंटवारे पर बातचीत अंतिम चरण में है। उन्होंने बताया कि उनकी पार्टी नगरीय निकाय चुनाव भाजपा के साथ गठबंधन में लड़ेगी और सीटों की संख्या जल्द तय कर ली जाएगी।

कांग्रेस की तैयारी पूरी मजबूती से

कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता स्वर्णिम चतुर्वेदी ने नए दलों की एंट्री को ज्यादा महत्व देने से इनकार किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पिछले लगभग एक वर्ष से चुनावी तैयारी में जुटी है और प्रदेश के करीब 11 हजार शहरी वार्ड तथा 14 हजार पंचायत इकाइयों में संगठन सक्रिय है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन-सी पार्टी चुनाव लड़ रही है। राजस्थान में पार्टी का संगठनात्मक आधार मजबूत है और मतदाता पूरी तरह जागरूक हैं।

पहली बार चुनाव लड़ेगी एआईएमआईएम

एआईएमआईएम ने भी पहली बार राजस्थान के पंचायत और निकाय चुनाव में आधिकारिक रूप से उतरने का फैसला किया है। पार्टी अपने चुनाव चिन्ह पर उम्मीदवार उतारेगी और अधिकृत प्रत्याशियों को भी मैदान में उतारेगी। प्रदेश प्रवक्ता एडवोकेट आरिफ मोहम्मद ने बताया कि पार्टी जल्द ही प्रदेशव्यापी जनसंपर्क अभियान शुरू करेगी। संगठन को गांव, वार्ड और जिला स्तर तक मजबूत करने की रणनीति तैयार की गई है और ऐसे उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाएगी जिनकी स्थानीय स्तर पर मजबूत पकड़ हो। यह फैसला पिछले महीने प्रदेश अध्यक्ष जमील खान और पार्टी प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी के बीच हुई बैठक के बाद लिया गया, जिसमें राजस्थान के राजनीतिक हालात की समीक्षा कर चुनाव लड़ने पर सहमति बनी।

ओबीसी कमीशन ने निकाय आरक्षण रिपोर्ट सौंपी

राजस्थान राज्य अन्य पिछड़ा वर्ग (राजनैतिक प्रतिनिधित्व) आयोग ने पंचायती एवं नगरीय निकायों में ओबीसी आरक्षण के संबंध में अपना प्रतिवेदन सरकार को सौंप दिया है। इससे राजस्थान में आगामी स्थानीय निकाय और पंचायत चुनावों के लिए एक बड़ी बाधा दूर हो गई है। राजस्थान राज्य अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आयोग के अध्यक्ष मदनलाल भाटी और उसके सदस्यों ने बुधवार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात कर उन्हें अपना प्रतिवेदन सौंपा। इस आयोग की रिपोर्ट मिलने के बाद पंचायती एवं नगरीय निकायों में ओबीसी आरक्षण के लिए आरक्षण लॉटरी

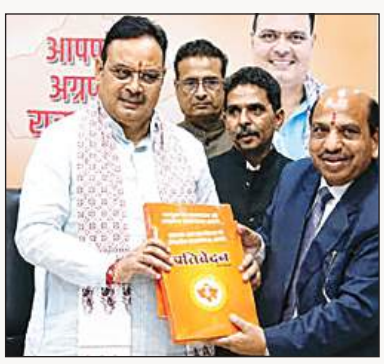

निकाली जाएगी। ओबीसी आरक्षण के लिए वार्डों का निर्धारण आयोग की सिफारिशों के आधार पर किया जाएगा। राज्य सरकार अगले कुछ दिनों में आरक्षण के लिए लॉटरी निकालने की तैयारी कर रही है।राज्य चुनाव आयोग आरक्षण-लॉटरी प्रक्रिया पूरी होने के बाद स्थानीय निकाय चुनावों के कार्यक्रम की घोषणा करेगा। आयोग ने राजस्थान उच्च न्यायालय को इस संभावित समय-सीमा के बारे में सूचित किया था। उल्लेखनीय है कि राजस्थान उच्च न्यायालय ने नगरपालिका और पंचायत चुनाव कराने में देरी पर नाराजगी जताई थी और ओबीसी आयोग को पांच अगस्त तक अपनी रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया था।

बसपा ने भी कसी कमर

बसपा ने भी चुनावी तैयारियां तेज कर दी हैं। पार्टी 23 अगस्त को जयपुर के बिरला ऑडिटोरियम में कार्यकर्ता सम्मेलन और संगठनात्मक समीक्षा बैठक आयोजित करेगी। बसपा के प्रदेश प्रभारी भगवान सिंह बाबा ने बताया कि राष्ट्रीय संयोजक आकाश आनंद इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि होंगे और प्रदेशभर से कार्यकर्ता इसमें शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि यह बैठक केवल कार्यकर्ता सम्मेलन नहीं बल्कि पंचायत और निकाय चुनाव की रणनीति तय करने का मंच भी होगी। पार्टी उन सभी सीटों पर उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर रही है जहां जीत की संभावना दिखाई देती है। साथ ही संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और नए कार्यकर्ताओं को जोड़ने पर भी जोर दिया जाएगा। बसपा का मानना है कि भाजपा और कांग्रेस, दोनों से नाराज मतदाताओं के बीच उसके लिए राजनीतिक अवसर मौजूद है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

डिजिटल भारत में लाभ से ज्यादा नुकसान?

डिजिटल भारत को सरकार बड़ी उपलब्धियों में से एक बताती है। पर उससे लाभ से ज्यादा अब नुकसान होने लगा है। देश का ऐसा कोई ऐसा राज्य नहीं है जहां इसकी वजह से लोग ठगी के शिकार न हो रहे हैं। ठग लोगों के खातों से पैसे उड़ा ले रहे हैं । जब कोई उपभोक्ता शिकायत करता है तो उसकी सुनवाई भी नहीं होती है। सरकार को इस पर ध्यान देना होगा। आज बैंकिंग, भुगतान, निवेश और सरकारी सेवाएं लोगों की अंगुलियों पर उपलब्ध हैं। लेकिन चिंताजनक तथ्य यह है कि तकनीक की यही सुविधा अब अपराधियों का सबसे बड़ा हथियार भी बनती जा रही है। साइबर ठगी, फर्जी निवेश, ओटीपी धोखाधड़ी और डिजिटल अरेस्ट जैसे अपराधों ने लोगों के भरोसे को गहरी चोट पहुंचाई है। ऐसे समय में सुप्रीम कोर्ट द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) सहित विभिन्न संस्थाओं को दिए गए निर्देश न केवल समायोचित हैं, बल्कि साइबर अपराध से निपटने के लिए समन्वित और सख्त प्रयासों की जरूरत भी बताने वाले हैं। सुप्रीम कोर्ट ने आरबीआइ को साइबर ठगी में इस्तेमाल होने वाले खातों के संबंध में चार सप्ताह के भीतर मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करने का निर्देश दिया है।

साथ ही, राज्य सरकारों, जांच एजेंसियों, कानूनी सेवा प्राधिकरणों और अदालतों के लिए भी दिशा-निर्देश जारी किए हैं। यह स्वीकार करना होगा कि साइबर अपराध अब केवल कानून-व्यवस्था का मुद्दा नहीं रह गया है, बल्कि यह आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़ा गंभीर विषय बन चुका है। आज ठग केवल तकनीक का ही नहीं, बल्कि इंसानी मनोविज्ञान का भी शातिर तरीके से इस्तेमाल कर रहे हैं। कभी बैंक अधिकारी बनकर, कभी पुलिस या सीबीआइ के नाम पर और कभी अदालत या सरकारी एजेंसी का भय दिखाकर लोगों को घंटों तक डिजिटल अरेस्ट में रखा जाता है। इसके बाद उनकी जीवनभर की कमाई कुछ ही मिनटों में ठग ली जाती है। सबसे बड़ी चुनौती साइबर अपराधों का अंतरराष्ट्रीय स्वरूप है। कई गिरोह विदेशों से संचालित होते हैं। धन के लेन-देन को छिपाने के लिए देश के भीतर हजारों म्यूल अकाउंट का इस्तेमाल किया जाता है। संदिग्ध खातों की समय रहते पहचान हो, उन्हें तुरंत फ्रीज किया जाए और बैंकिंग प्रणाली की निगरानी मजबूत की जाए, तो ठगी की बड़ी रकम बचाई जा सकती है। आरबीआइ की एसओपी एक प्रभावी कार्ययोजना होनी चाहिए, जिसका सभी बैंक समान रूप से पालन करें। पुलिस, बैंक, दूरसंचार कंपनियों और साइबर सेल के बीच रियल-टाइम समन्वय भी आवश्यक है। साइबर अपराध की शिकायत दर्ज होने और कार्रवाई शुरू होने के बीच जितनी देरी कम की जाए।

संजय

आज बैंकिंग, भुगतान, निवेश और सरकारी सेवाएं लोगों की अंगुलियों पर उपलब्ध हैं। लेकिन चिंताजनक तथ्य यह है कि तकनीक की यही सुविधा अब अपराधियों का सबसे बड़ा हथियार भी बनती जा रही है। साइबर ठगी, फर्जी निवेश, ओटीपी धोखाधड़ी और डिजिटल अरेस्ट जैसे अपराधों ने लोगों के भरोसे को गहरी चोट पहुंचाई है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

लोकतंत्र को दिशा देने में युवा आंदोलनों की भूमिका

अश्विनी कुमार

समय-समय पर भारत में अनेक युवा आंदोलनों ने समाज और शासन को नयी दिशा दी है। जब भी युवाओं ने अपने अधिकारों और न्याय के लिए आवाज बुलंद की, उसकी गूंज सत्ता के गलियारों तक पहुंची और उसने परिवर्तन का एक नया इतिहास रचा। 1979-85 का असम आंदोलन, 1990 के मंडल विरोधी प्रदर्शन, इंडिया अगेंस्ट करप्शन अभियान, 2019 का सीएए-एनआरसी विरोधी आंदोलन, निर्भया आंदोलन तथा उससे पहले 1974-75 का जेपी आंदोलन-इन सभी आंदोलनों का नेतृत्व मुख्यत: विद्यार्थियों और युवाओं ने किया। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के परिसर लोकतांत्रिक असहमति के सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बन गए। कॉकरोच जनता पार्टी के नेतृत्व में नीट-यूजी प्रश्नपत्र लीक के विरोध और शिक्षा व्यवस्था में सुधार की मांग को लेकर चलाया गया युवा आंदोलन भी ऐसा ही ऐतिहासिक आंदोलन था।

इसकी आवाज देश के कोने-कोने तक पहुंची। इस आंदोलन को कुचलने के लिए प्रदर्शनकारी युवाओं पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज न केवल लोकतांत्रिक असहमति के प्रति सत्ता की असहनशीलता उजागर करता है। इतिहास की सीख यह भी कि लोकतंत्र में किसी नागरिक, विशेषकर युवाओं की आवाज को बलपूर्वक दबाने से आंदोलन समाप्त नहीं होते। बल प्रयोग असंतोष को और गहरा करता है तथा परिवर्तन की मांग को और अधिक सशक्त बनाता है। कि शब्दों या कर्मों के जरिये मानवीय गरिमा पर किया गया आघात आत्मा पर ऐसा घाव छोड़ जाता है, जिसकी प्रतिक्रिया अंतत: सामने आती है। सीजेपी आंदोलन का जन्म इसका स्पष्ट उदाहरण है। जिस साहस, धैर्य और विश्वास के साथ युवाओं ने कठिन परिस्थितियों का सामना किया और सरकार को अपनी मांगें मानने को विवश किया, वह उनकी एकता और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है। यह पुष्टि करता है कि किसी भी लोकतांत्रिक सरकार के लिए संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान करना जरूरी है। भारत की आत्मा न्याय, समानता और लोकतंत्र में अटूट विश्वास से ही परिभाषित होती है।

इसी कारण रैलियों, धरनों और प्रदर्शनों के माध्यम से शांतिपूर्ण ढंग से अपना विरोध दर्ज कराने का अधिकार संविधान द्वारा प्रदत्त पवित्र मौलिक अधिकार है और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभिन्न अंग भी। इसके साथ ही यह यकीनी बनाना भी उतना ही जरूरी है कि शांतिपूर्ण सभा और

विरोध-प्रदर्शन अपनी संवैधानिक और नैतिक सीमाओं का उल्लंघन न करें। किसी भी व्यक्ति द्वारा, किसी भी वजह से, वाणी या कर्म से की गई हिंसा अंतत: और अधिक हिंसा को ही जन्म देती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी चेतावनी दी थी कि उद्देश्य चाहे कितना ही महान क्यों न हो, उसकी प्राप्ति के लिए अपनाए गये साधनों की नैतिकता व औचित्य से कभी समझौता नहीं किया जा सकता। जंतर-मंतर पर हुआ यह आंदोलन जीवंत प्रमाण है कि कोई भी सरकार अपने नागरिकों के मौलिक मानवीय और संवैधानिक अधिकारों की अनदेखी नहीं कर सकती। इसने एक बार फिर सिद्ध कर दिया कि लोकतंत्र की असल शक्ति जनता की आवाज में निहित होती है और उसकी रक्षा नागरिकों की जागरूकता, एकता तथा दृढ़ इच्छाशक्ति पर निर्भर होती है। जब चुनी गई सरकारें अपने सिद्धांतों और लोकतांत्रिक मूल्यों से भटकने लगती हैं, तब शांतिपूर्ण जनांदोलन लोकतंत्र को सही दिशा देने और अधिक सशक्त बनाने का सबसे उपयुक्त माध्यम बन जाते हैं। जैसा कि एक शायर ने कहा-'उसूलों पे जहां आंच आये टकराना ज़रूरी है, जो जिंदा हों तो फिर जिंदा नजर आना जरूरी है।' युवा सदैव उच्च आदर्शों, सिद्धांतों और प्रगतिशील परिवर्तन से प्रेरित रहते हैं। उनके मन में समाज और देश के लिए कुछ बड़ा और सार्थक करने का जज्बा होता है। यही कारण है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में विद्यार्थियों और युवाओं ने अत्यंत अहम और ऐतिहासिक भूमिका निभाई। इतिहास यह भी बताता है कि युवाओं और सत्ता में बैठे लोगों के विचारों में अंतर हमेशा से रहा है। किंतु दूरदर्शी और संवेदनशील सरकारों का कर्तव्य है कि वे युवाओं की भावनाओं, आकांक्षाओं और चिंताओं का सम्मान करें तथा उनके प्रति दमनकारी या असहनशील रवैया न अपनाएं, क्योंकि यही युवा देश का भविष्य हैं।

यहां तक कि ब्रिटिश शासन के दौरान भी, जब हजारों स्वतंत्रता सेनानियों को औपनिवेशिक सरकार द्वारा जेलों में डाल दिया गया और उन्हें अनेक यातनाएं सहनी पड़ीं, तब भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं जब कुछ अंग्रेज शिक्षकों ने प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों की रक्षा की और यह सुनिश्चित किया कि उनके साथ यथासंभव संयमित और मानवीय व्यवहार किया जाए। मेरे (लेखक के) पिता लाहौर में छात्र नेता थे। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण उन्हें 193० 1936 और फिर 1942 से 1945 के बीच कई बार गिरफ्तार किया गया तथा जेल भी जाना पड़ा।

पुनर्वास सोच के साथ हाइब्रिड मॉडल अपनाएं

जब तक समाज इस बुराई का सामाजिक बहिष्कार नहीं करेगा और पीड़ित युवाओं को आत्मीयता, चिकित्सा और पुनर्वास का संबल नहीं देगा, तब तक कानून और सामाजिक संवेदनशीलता के बिना यह चक्र अधूरा रहेगा।

डॉ. सुधीर कुमार

भारत आज एक अदृश्य चुनौती से जूझ रहा है नशा। यह हमारी युवा शक्ति के विरुद्ध एक सुनियोजित कानूनी, मानसिक और आर्थिक युद्ध है, जिसे समय रहते परास्त करना आज की सबसे बड़ी राष्ट्रीय आवश्यकता बन चुका है। संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत नागरिकों को मिले जीने के अधिकार और अनुच्छेद 47 (नीति निर्देशक तत्वों) में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नशीले पदार्थों पर प्रतिबंध लगाने के स्पष्ट आदेश के बावजूद, देश में नशे का बढ़ता कारोबार एक गंभीर चिंता का विषय है। हमारे पास नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंसेस एक्ट, 1985 और सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद अधिनियम, 2003 जैसे मौत की सजा तक का प्रावधान करने वाले कानून मौजूद हैं, फिर भी जमीनी स्तर पर इनकी स्थिति और बढ़ती नशाखोरी के बीच एक बहुत बड़ी खाई बनी हुई है। आधुनिक युग में नशे के सौदागरों ने अपनी कार्यशैली पूरी तरह बदल ली है।

पारंपरिक तस्करी के रास्तों के अलावा अब 'डार्क वेब', सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और क्रिप्टोकरेंसी के माध्यम से वर्चुअल डिलीवरी का एक खतरनाक काला जाल बुना जा रहा है, जहां युवा अनजाने में ही इस वर्चुअल दलदल में फंसते चले जाते हैं। इस डिजिटल युग की चुनौती से निपटने के लिए हमारी साइबर पुलिस इकाइयों और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के बीच एक विशेष 'ज्वाइंट साइबर-नार्को सेल' का गठन किया जाना समय की सबसे बड़ी मांग है, जो इन गुप्त डिजिटल नेटवर्क्स को ट्रैक कर सके और तकनीकी मोर्चे पर भी अपराधियों को नेस्तनाबूद कर सके। न्यायपालिका ने इस मुद्दे पर कई बार अपनी चिंता व्यक्त की है। ऐसे मामलों में नरमी बरतना राष्ट्रद्रोह जैसा है। सुप्रीम कोर्ट ने विभिन्न मामलों जैसे 'इन्द्रजीत सिंह बनाम पंजाब राज्य' (2011) और 'कुंदनभाई दुलभाई शेखावत बनाम गुजरात राज्य' (1996) में रेखांकित किया है कि नशीले पदार्थों के तस्कर न केवल कानून का उल्लंघन करते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और स्वास्थ्य के बुनियादी अधिकारों की हत्या करते हैं।

इसलिए 'सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन बनाम यूनियन ऑफ इंडिया' (1998) जैसे मामलों में भी बार-बार दोहराया गया है कि ड्रग्स से जुड़े अपराधों में 'जीरो टॉलरेंस पॉलिसी' ही एकमात्र विकल्प है। हमें देखना होगा कि दुनिया के अन्य विकसित देश इस आपदा से कैसे निपट रहे हैं। जहां एक ओर पुर्तगाल ने नशा रखने को अपराध की श्रेणी से हटाकर इसे एक 'सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या' घोषित किया और अपराधियों को जेल के बजाय डॉक्टरों व मनोवैज्ञानिकों के पैनल के सामने पेश कर ओवरडोज से होने वाली मौतों को न्यूनतम कर दिया, वहीं दूसरी ओर सिंगापुर ने 'आयरन फिस्ट' यानी कठोरतम दंड और मौत की सजा की नीति अपनाई है। भारत को भी पुर्तगाल की 'पुनर्वास सोच' और सिंगापुर की 'कठोर प्रवर्तन नीति' का एक हाइब्रिड मॉडल अपनाने की जरूरत है।

विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को शत-प्रतिशत नशा-मुक्त बनाने पर सरकारी 'एक्सीलेंस ग्रांट' और रैंकिंग में बोनस अंक मिलने का नियम बने, जिसकी जवाबदेही छात्र संघ और विभागाध्यक्ष की हो। इसके साथ ही, ड्रग पैडलर्स की संपत्ति ज़ब्त कर उसे 'युवा कौशल विकास कोष' में डाला जाए और उनसे सार्वजनिक निर्माण या स्वच्छता अभियानों में अनिवार्य कठोर शारीरिक श्रम करवाया जाए। साथ ही, कानून के विद्यार्थियों को 'कानूनी साक्षरता दूत' बनाकर हर महीने गांवों या स्कूलों में जाकर एनडीपीएस एक्ट के दुष्परिणामों के बारे में समझाना अनिवार्य किया जाए। यदि कोई अल्पवयस्क बच्चा गंभीर नशे की गिरफ्त में पाया जाता है और अपराध की दुनिया में उतरता है, तो काउंसलिंग के बाद माता-पिता की भी विधिक जवाबदेही तय होनी चाहिए। हमें समझना होगा कि युवा केवल रासायनिक नशे के शिकार नहीं हो रहे, बल्कि आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा और अकेलेपन से उपजे मानसिक अवसाद के कारण वे इस 'डोपामिन ट्रैप' में फंस रहे हैं।

अत: शिक्षण संस्थानों में 'मानसिक स्वास्थ्य परामर्श केंद्र' की स्थापना आज की सबसे अनिवार्य आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, नशे की समस्या के विरुद्ध हर वर्ग को मिलकर एक व्यापक 'जन-आंदोलन' चलाना होगा, जिसमें पंचायती राज संस्थाएं, महिला मंडल, स्थानीय क्लब और मीडिया प्रमुख भूमिका निभाएं। जब तक समाज इस बुराई का सामाजिक बहिष्कार नहीं करेगा और पीड़ित युवाओं को आत्मीयता, चिकित्सा और पुनर्वास का संबल नहीं देगा, तब तक कानून और सामाजिक संवेदनशीलता के बिना यह चक्र अधूरा रहेगा। यदि हमें वर्ष 2047 के 'विकसित भारत' के स्वर्णिम स्वप्न को जीवंत रखना है, तो हमें अपनी युवा शक्ति को केवल जनगणना के आंकड़ों का हिस्सा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की प्रज्वलित ऊर्जा बनाना होगा। कानून की तलवार जब करुणा और संवेदना के साथ मिलकर चलेगी, तभी यह समाज इस शाप से मुक्त हो पाएगा।

मखाना खीर

उपवास में एनर्जी बनाए रखने के लिए मखाने की खीर का सेवन कर सकते हैं। इसे बनाने के लिए भुने मखाने, दूध, इलायची और सूखे मेवों का इस्तेमाल किया जाता है। इस सभी को मिलाकर साथ में पकाएं और मखाने की स्वादिष्ट खीर तैयार करें। मखाने की खीर कैल्शियम और प्रोटीन का अच्छा स्रोत मानी जाती है।

शकरकंद चाट व साबूदाना खिचड़ी

यह व्रत की सबसे लोकप्रिय डिश है। इसे बनाने के लिए साबूदाना, मूंगफली, उबले आलू, हरी मिर्च और सेंधा नमक चाहिए। इन सामग्री से फलाहारी खिचड़ी बनाएं, जो कि हल्की, स्वादिष्ट और लंबे समय तक ऊर्जा देने वाली डिश है। इसे दही के साथ परोसने से स्वाद और बढ़ जाता है। ये फलाहारी डिश लंबे समय तक पेट को भरा रखती है, साथ ही ऊर्जा प्रदान करती है। इसे बनाने के लिए शकरकंद, सेंधा नमक, काली मिर्च और जीरा चाहिए। उबले शकरकंद में सेंधा नमक, काली मिर्च, भुना जीरा और नींबू का रस मिलाकर चाट तैयार करें। इस तरह की चाट स्वाद और पोषण का बेहतरीन मेल है। आप व्रत में सामक चावल खा सकते हैं। सामक के चावल में मूंगफली, जीरा, हरी मिर्च और उबले आलू मिलाकर तैयार पुलाव व्रत के लिए बेहतरीन विकल्प है।

सावन में हर दिन बनाएं अलग फलाहारी

सावन का महीना भगवान शिव की आराधना, व्रत और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। इस पूरे महीने कई श्रद्धालु सोमवार व्रत के साथ-साथ नियमित उपवास भी रखते हैं। ऐसे में सबसे बड़ी चुनौती होती है कि हर दिन फलाहार में क्या नया बनाया जाए, जो स्वादिष्ट होने के साथ पौष्टिक भी हो। अक्सर लोग व्रत में सिर्फ आलू, साबूदाना या फल खाकर काम चला लेते हैं, लेकिन लगातार एक जैसा भोजन करने से स्वाद के साथ शरीर को मिलने वाला पोषण भी सीमित हो सकता है। अगर आप भी सावन के व्रत में हेल्दी और टेस्टी फलाहारी भोजन की तलाश कर रहे हैं, तो आप इन रेसिपीज में साबूदाना, कुट्टू, सिंघाड़ा, मखाना, शकरकंद, सामक के चावल, दही और ताजे फलों जैसी व्रत में प्रचलित सामग्री का उपयोग किया गया है। ये डिश न केवल लंबे समय तक पेट भरा रखने में मदद करती हैं, बल्कि शरीर को ऊर्जा भी देती हैं।

सिंघाड़े के आटे की पूरी

सिंघाड़े के आटे की पूड़िया भी व्रत में खा सकते हैं। इसे बनाने के लिए सिंघाड़े के आटे में थोड़ा सा आलू मैश करके आटे को गूंथ लें। छोटी लोई बनाकर पूड़ी बेलें और घी में सेंकें। दही या आलू की व्रत वाली सब्जी के साथ इसका स्वाद बेहद लाजवाब लगता है।

व्रत वाली दही आलू

उबले आलू में दही मिलाकर स्वादिष्ट फलाहारी डिश बना सकते हैं। इसमें सेंधा नमक, जीरा और हरी मिर्च का तड़का लगाएं। यह डिश पूरी या कुट्टू की रोटी के साथ अच्छी लगती है।

कुट्टू के आटे का चीला

कुट्टू के आटे से बनी डिश भी व्रत में खाई जा सकती है। चीला बनाने के लिए कुट्टू के आटे में उबला आलू, हरी मिर्च और धनिया मिलाकर बैटर तैयार करें। इसे तवा पर घी लगाकर फैलाएं और दोनों तरफ से सेंक लें। चीला कुरकुरा और भरपेट भोजन का अच्छा विकल्प है। इसे व्रत वाली हरी चटनी या दही के साथ खाया जा सकता है।

हंसना मना है

खैरियत पूछने का जमाना गया साहिब, आदमी ऑनलाइन दिख जाये तो समझ लेना सब ठीक है.. भगवान हम सबको ऑनलाइन रखे।

जरुरत से ज्यादा भगवान को याद मत किया करो क्योंकि, किसी दिन भगवान ने याद कर लिया तो, लेने के देने पड़ जायेंगे।

तुम ही हो मेरे आंखों के तारे, तुम ही हो मेरे जीने के सहारे, बहुत परेशान हूं मैं मेरे यार, उधारी के पैसे चूका दो सारे।

पति- मार्किट में एक अनजान लड़की से कहा हेलो! पत्नी गुस्से में: बताओ ये कौन थी? पति कुछ सोचकर : ओए चुप कर, अभी उसे भी बताना है की, तुम कौन हो..!

पति: काम के लिए बाई रखें? पत्नी: नहीं चाहिए। पति: क्यों? पत्नी: तुम्हारी आदते मैं अच्छी तरह जानती हूं। भूल गए? पहले मैं भी बाई ही थी!

पप्पू जब इतिहास का पेपर स्कूल में परीक्षा के समय देने जाता था तो जो सवाल नहीं आता था उसको पप्पू खाली छोड़ देता था.. लेकिन गलत लिख के कभी इतिहास से छेड़छाड़ नहीं करता था..

कहानी — दो अनमोल हीरे

एक व्यापारी को बाज़ार में घूमते हुए एक बहुत अच्छी नस्ल का ऊंट दिखाई पड़ा। व्यापारी और ऊंट बेचने वाले के बीच काफी लंबी सौदेबाजी हुई और आखिर में व्यापारी ऊंट खरीद कर घर ले आया। घर पहुंचने पर व्यापारी ने अपने नौकर को ऊंट का कजावा (काठी) निकालने के लिए बुलाया। कजावे के नीचे नौकर को एक छोटी सी मखमल की थैली मिली जिसे खोलने पर उसे कीमती हीरे जवाहरात भरे होने का पता चला। नौकर चिल्लाया, मालिक आपने ऊंट खरीदा, लेकिन देखो, इसके साथ क्या मुफ्त में आया है। व्यापारी भी हैरान था। उसने अपने नौकर के हाथों में हीरे देखे जो कि चमचमा रहे थे और सूरज की रोशनी में और भी टिम टिमा रहे थे। व्यापारी बोला- मैंने ऊंट ख़रीदा है, न कि हीरे, मुझे उसे तुरंत वापस करना चाहिए। नौकर मन में सोच रहा था कि मेरा मालिक कितना बेवकूफ है। बोला- मालिक किसी को पता नहीं चलेगा। पर, व्यापारी ने एक न सुनी और वह तुरंत बाज़ार पहुंचा और दुकानदार को मखमली थैली वापिस दे दी। ऊंट बेचने वाला बहुत खुश था, बोला, मैं भूल ही गया था कि अपने कीमती पत्थर मैंने कजावे के नीचे छुपा के रख दिए थे। अब आप इनाम के तौर पर कोई भी एक हीरा चुन लीजिए। व्यापारी बोला- मैंने ऊंट के लिए सही कीमत चुकाई है इसलिए मुझे किसी शुक्राने और उपहार की जरूरत नहीं है। जितना व्यापारी मना करता जा रहा था, ऊंट बेचने वाला उतना ही जोर दे रहा था। अंत में व्यापारी ने मुस्कुराते हुए कहा- जब मैंने थैली वापस लाने का सोचा तो मैंने पहले से ही दो सबसे कीमती हीरे इसमें से अपने पास रख लिए थे। इस कबूलनामें के बाद ऊंट बेचने वाला भड़क गया उसने अपने हीरे जवाहरात गिनने के लिए थैली को तुरंत खाली कर लिया। पर वह था बड़ी पशोपेश में बोला- मेरे सारे हीरे तो यहीं है, तो सबसे कीमती दो कौन से थे जो आपने रख लिए? व्यापारी बोला- मेरी ईमानदारी और मेरा आत्म सम्मान। जिस-जिस के पास यह 2 हीरे है वह दुनियां के सबसे अमीर व्यक्ति हैं।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा, धन संचय करने में सफलता मिलेगी। वाणी में सौम्यता रहेगी, जिससे पारिवारिक माहौल खुशनुमा रहेगा। पेट या गले में हल्की समस्या संभव है।

वृषभ — चंद्रमा आपकी ही राशि में रहने से मानसिक शांति और आकर्षण बना रहेगा। आपके सभी सोचे हुए काम समय पर पूरे होंगे। व्यापार में नए अवसरों की प्राप्ति होगी।

मिथुन — मंगल आपकी राशि में होने से ऊर्जा बनी रहेगी, पर फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें। कामकाज के सिलसिले में दूर की यात्रा करनी पड़ सकती है।

कर्क — सूर्य, बुध और गुरु आपकी राशि में होने से समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय के नए जरिया बनेंगे और अटका हुआ धन मिलने की संभावना है।

सिंह — करियर के क्षेत्र में बड़ी सफलता मिलने के मजबूत योग हैं। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। व्यापार विस्तार की योजनाएं सफल होंगी।

कन्या — शुक्र आपकी राशि में होने से रचनात्मकता और आकर्षण बढ़ेगा। अटके हुए कार्य भाग्य के सहयोग से पूरे होने लगेंगे। धार्मिक या सामाजिक गतिविधियों में आपकी रुचि बढ़ेगी।

तुला — वित्तीय फैसलों में सावधानी बरतें, बड़ा निवेश करने से बचें। वाहन चलाते समय या काम करते समय सतर्कता जरूरी है। कार्यस्थल पर काम की गति थोड़ी धीमी रह सकती है।

वृश्चिक — व्यापारिक साझेदारी में बड़ा मुनाफा होने के योग हैं। रोजगार के नए और बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। दैनिक कार्यों में मन मुताबिक सफलता मिलने से प्रसन्नता होगी।

धनु — प्रतिस्पर्धियों और विरोधियों पर आपकी विजय तय है। नौकरी-पेशा लोगों के लिए दिन थोड़ा व्यस्त अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाने की जरूरत है।

मकर — विद्यार्थियों और रचनात्मक क्षेत्र से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। आर्थिक रूप से स्थिति सुधरेगी, निवेश से फायदा हो सकता है। सुबह की सैर लाभदायक सिद्ध होगी।

कुम्भ — सुख-सुविधाओं की वृद्धि होगी और प्रॉपर्टी संबंधी काम बनेंगे। माताजी का पूर्ण सहयोग और आशीर्वाद आपको मिलेगा। कार्यस्थल पर अपने काम को लेकर स्पष्टता बनाए रखें।

मीन — शनि आपकी राशि में होने से अपने काम में निरंतरता बनाए रखें। पराक्रम और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, छोटी यात्रा संभव है। नियमित वॉक और ध्यान करें।

बॉलीवुड | मन की बात

आजकल फिल्मों में किरदारों को ठीक से गढ़ा नहीं जाता : अखिलेन्द्र

अखिलेंद्र मिश्रा का कहना है कि हिंदी सिनेमा और टेलीविजन में यादगार किरदारों की जो लोकप्रियता लंबे समय तक बनी रहती थी, वह अब कम हो गई है। उनका मानना है कि आजकल की फिल्मों में अलग तरह के किरदार सामने नहीं आ रहे हैं। अपनी बात को उन्होंने विस्तार से एक हालिया इंटरव्यू में साझा किया। हाल ही में पीटीआई से बातचीत करते हुए अभिनेता अखिलेंद्र मिश्रा कहते हैं, स्क्रीन टाइम के बजाय मजबूत किरदार ही वे चीजें थीं जिनकी वजह से सपोर्टिंग रोल लोगों की यादों में बसे रहते थे। पहले लोग किरदारों से जुड़ते थे। आज फिल्मों में किरदारों को ठीक से गढ़ा नहीं जाता। हर कोई एक ही तरह से एक्टिंग करता है और एक ही लहजे में बात करता है। इस वजह से किरदारों का रंग और पहचान गायब हो गई है। जब दर्शक किसी किरदार से जुड़ नहीं पाते, तो आखिरकार फिल्मों को ही नुकसान होता है।' वह आगे कहते हैं, 'जब आप इंद्रधनुष देखते हैं तो दूसरों को भी उसे देखने के लिए बुलाते हैं क्योंकि उसमें सातों रंग दिखाई देते हैं। इसी तरह, कहानी, एक्टिंग, संगीत, भावनाओं और प्रस्तुति में अलग-अलग रंगों की जरूरत होती है। आज हमें सिर्फ सफेद रोशनी दिखाई दे रही है, इंद्रधनुष गायब है।' यह पूछे जाने पर कि पुरानी फिल्मों के किरदार आज भी क्यों याद किए जाते हैं जबकि आजकल के कई किरदार जल्दी ही भुला दिए जाते हैं, तो इस पर अखिलेंद्र मिश्रा कहते हैं, 'गब्बर सिंह, मोगैम्बो या सखाराम जैसे किरदार कहां हैं? आज क्रूर सिंह, मिर्ची सेठ जैसे किरदार कहाँ लिखे जा रहे हैं? पुलिस पर फिल्में तो अब भी बन रही हैं, लेकिन आपको ऐसे यादगार किरदार नहीं मिलते। दरअसल, निर्माता पहले अच्छी तरह से गढ़े गए किरदारों के लिए थिएटर एक्टर्स को चुनते थे, जैसे अमजद खान और अमरीश पुरी। कहने का मतलब है कि उन्होंने ऐसे एक्टर्स को ढूंढा जो उन किरदारों में ढल सकें। मुझे थिएटर में मेरे काम की वजह से क्रूर सिंह के रोल के लिए चुना गया था। जॉन मैथ्यू मथन ने मेरा एक नाटक देखने के बाद मुझे सरफरोश के लिए चुना था।

फिल्म 'टॉक्सिक' के ट्रेलर में कियारा की परफॉर्मेंस के कायल हुए सिद्धार्थ मल्होत्रा

बॉलीवुड | मसाला

यश और कियारा की मोस्ट अवेटेड फिल्म का मोस्ट अवेटेड ट्रेलर रिलीज हो गया है। ट्रेलर रिलीज होने के बाद से ही जो लोग भी कियारा को यश के साथ इंटीमेट सीन करने पर ट्रोल कर रहे थे, अब उनकी परफॉर्मेंस की तारीफ भी कर रहे हैं। इस बीच अब कियारा के हसबैंड और बॉलीवुड एक्टर सिद्धार्थ मल्होत्रा ने भी अपनी पत्नी की परफॉर्मेंस की जमकर तारीफ की और ट्रोलर्स को करारा जवाब दिया।

टॉक्सिक के ट्रेलर में कियारा आडवाणी की परफॉर्मेंस ने सबको हैरान कर दिया है और अब तारीफ करने वालों की फेहरिस्त में उनके पति सिद्धार्थ का नाम भी शुमार हो गया है। ट्रोलिंग के बीच कियारा आडवाणी को अपने पति सिद्धार्थ मल्होत्रा का साथ मिला है। जहां सोशल मीडिया का एक वर्ग यश के साथ इंटीमेट सीन को लेकर एक्ट्रेस की आलोचना कर रहा है, वहीं सिद्धार्थ ने फिल्म के लिए उनकी मेहनत पर ध्यान दिया है और उम्मीद जताई है कि यह उनके बेहतरीन परफॉर्मेंस में से एक हो सकती है। रविवार को सिद्धार्थ ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर टॉक्सिक का ट्रेलर शेयर किया और कियारा व पूरी टीम के लिए एक नोट लिखा। उन्होंने लिखा, तुम्हारी मेहनत, कड़ी मशक्कत और जुनून, ये सब बड़े पर्दे पर दिखेगा। यह तुम्हारी बेहतरीन फिल्मों में से एक होगी, की। सिद्धार्थ ने डायरेक्टर गीतू मोहनदास, यश और बाकी टीम को भी बधाई दी और लिखा, गीतू मोहनदास और यश, आप और पूरी टीम ने जो जादू रचा है, उसे देखने का बेसब्री से इंतजार है। टॉक्सिक टीम को शुभकामनाएं। 26 अगस्त का इंतजार है। गीतू मोहनदास के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म में कियारा ने नादिया का रोल निभाया है। टॉक्सिक: अ फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स में यश के साथ कियारा, नयनतारा, हुमा कुरैशी, तारा सुतारिया और रुक्मिणी वसंत भी हैं। यह फिल्म 26 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है।

अरशद वारसी की वेब सीरीज असुर 3 में हुई श्वेता बसु की एंट्री

असुर गौरव शुक्ला द्वारा बनाई गई एक बहुत ही सफल और दिलचस्प साइकोलॉजिकल थ्रिलर है। दो सीजन की जबरदस्त सफलता के बाद मेकर्स अब तीसरे सीजन को लाने की तैयारी में है और इसी को लेकर अब अपडेट सामने आ गई है। धनंजय राजपूत और निखिल नायर के निभाए किरदार इस फ्रैंचाइजी का अहम हिस्सा बन चुके हैं और अब यह देखना दिलचस्प होगा कि फैन्स के लिए आगे क्या है। कास्ट में और रोमांच जोड़ने के लिए, एक्ट्रेस श्वेता बसु प्रसाद तीसरे सीजन में शामिल होने जा रही हैं। हालांकि उनके

किरदार के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन उम्मीद है कि उनके आने से इस थ्रिलर में एक नया मोड़ आएगा। पिंकविला की रिपोर्ट्स के मुताबिक, असुर के मोस्ट अवेटेड तीसरे सीजन की शूटिंग सितंबर में शुरू होने वाली है और मेकर्स कहानी को एक नए चैप्टर के साथ आगे बढ़ाने की तैयारी कर रहे हैं। जाहिर है कि वेब सीरीज के तीसरे भाग में भी अरशद वारसी और बरुन सोबती ही मुख्य भूमिकाओं में होंगे, जो पहले सीजन से ही इस शो का अहम हिस्सा रहे हैं।

जानकारी के लिए बता दें कि कैमरे के पीछे एक और बड़ा बदलाव यह है कि लेखक और क्रिएटर गौरव शुक्ला, जो असुर से गहराई से जुड़े रहे हैं, सीजन 3 के साथ डायरेक्टर के तौर पर अपनी शुरुआत करेंगे। पिछले दो सीजन का निर्देशन ओनी सेन ने किया था, जबकि शुक्ला लेखक और क्रिएटर थे। गौरव शुक्ला इस बार प्रोड्यूसर की भूमिका भी निभाएंगे।

अजब-गजब | ये है दुनिया का सबसे अनोखा बंदर

इस बंदर की आवाज मात्र से हिल जाता है जंगल

जंगल की दुनिया बाहर से जितनी शांत दिखाई देती है, अंदर से उतनी ही दिलचस्प होती है। यहां हर जानवर का अपना इलाका और अपना अंदाज होता है। कोई जमीन पर दौड़ता है, कोई पानी में रहता है तो कोई पेड़ों को ही अपना घर बना लेता है। इन्हीं में एक ऐसा बंदर भी है, जो जंगल के पेड़ों पर इधर-उधर घूमता रहता है और अपनी तेज आवाज से दूर तक अपनी मौजूदगी का एहसास कराता है। ऐसा लगता है जैसे वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक घूमते हुए पूरे जंगल पर अपनी नजर रख रहा हो। इस बंदर को हॉलर मंकी कहा जाता है। इसकी सबसे बड़ी पहचान इसका शरीर नहीं, बल्कि इसकी बेहद तेज और गहरी आवाज है। शांत जंगल में जब यह बंदर जोर से आवाज लगाता है तो उसकी गूंज कई किलोमीटर दूर तक सुनाई दे सकती है। कई बार इसकी आवाज सुनकर ऐसा लगता है जैसे जंगल में कोई बड़ा जानवर दहाड़ रहा हो।

हॉलर मंकी की आवाज इतनी अलग और तेज होती है कि जब यह जोर से पुकारता है तो आसपास का पूरा जंगल उसकी आवाज से गूंज उठता है। खासकर शांत वातावरण में इसकी आवाज काफी दूर तक पहुंच सकती है। कई बार एक समूह के बंदर एक साथ आवाज लगाने लगते हैं। ऐसे में जंगल में चारों तरफ से गहरी और तेज आवाज सुनाई देती है। दूर से सुनने पर ऐसा लग सकता है कि कोई बड़ा और खतरनाक जानवर जंगल में घूम रहा है, जबकि असल में आवाज पेड़ पर बैठे छोटे से बंदर की होती है। हॉलर मंकी को उसकी तेज आवाज के

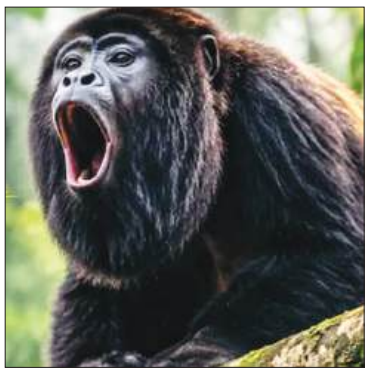

कारण ही यह नाम मिला है। 'Howler' का मतलब ही जोर से आवाज करने वाला होता है। इसकी आवाज शांत परिस्थितियों में कई किलोमीटर तक सुनाई दे सकती है और कुछ रिपोर्टों में इसकी आवाज करीब 5 किलोमीटर तक पहुंचने की बात कही जाती है। हालांकि आवाज कितनी दूर तक जाएगी, यह जंगल की बनावट, हवा और आसपास के शोर जैसी परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है।

हॉलर मंकी की तेज आवाज सिर्फ शोर मचाने के लिए नहीं होती। यह उसके लिए बातचीत करने का एक तरीका है। जंगल में अलग-अलग समूहों के बंदर एक-दूसरे से काफी दूरी पर रह सकते हैं। ऐसे में हर बार उनके लिए पास जाकर संपर्क करना आसान नहीं होता। इसलिए वो तेज आवाज के जरिए दूसरे समूहों तक अपना संदेश पहुंचाते हैं। इससे उन्हें यह पता लगाने में भी मदद मिल सकती है कि आसपास दूसरे बंदरों का कोई समूह मौजूद है या नहीं। हॉलर मंकी की आवाज का संबंध उसके इलाके से भी होता है। जब कोई समूह जोर-जोर से आवाज लगाता है तो यह दूसरे समूहों को अपनी मौजूदगी का संकेत दे सकता है। सीधे शब्दों में कहें तो यह आवाज एक तरह से बताती है कि इस इलाके में पहले से एक समूह मौजूद है। इस तरह दूर रहने वाले समूह बिना एक-दूसरे के पास आए भी अपनी मौजूदगी का पता लगा सकते हैं।

हॉलर मंकी की सबसे हैरान करने वाली बात यही है कि उसका शरीर किसी बड़े शिकारी जानवर जैसा नहीं होता, फिर भी उसकी आवाज बहुत गहरी और तेज होती है। इसके गले और आवाज पैदा करने वाली शारीरिक बनावट इसमें बड़ी भूमिका निभाती है। हॉलर मंकी में बढ़ी हुई हायॉइड हड्डी और खास वोकल संरचना होती है। यह उसकी आवाज को ज्यादा गहरा और गूंजदार बनाने में मदद करती है। यानी प्रकृति ने इस बंदर को बिना बड़ा शरीर दिए ही ऐसी आवाज दी है, जिससे उसकी मौजूदगी दूर तक महसूस हो जाती है। हॉलर मंकी का जीवन पूरी तरह पेड़ों से जुड़ा हुआ है। यह पेड़ों की पत्तियां, फल और दूसरी वनस्पतियां खाता है। पेड़ों की शाखाओं पर ही वह आराम करता है, घूमता है और अपने समूह के साथ समय बिताता है। इसी कारण जंगल में पेड़ों की कमी इनके लिए बड़ी समस्या बन सकती है। जंगल कटने पर इन्हें रहने की जगह के साथ-साथ भोजन की भी परेशानी हो सकती है।

चुगली कर करोड़पति बनी महिला, खरीद लिए दो दो घर, बस लीक कर देती थी मोहल्ले का सीक्रेट!

चुगली को आमतौर पर लोग एक बुरी आदत के तौर पर देखते हैं। मोहल्ले में कौन किससे लड़ रहा है, किसके घर में क्या चल रहा है, किसकी किससे दोस्ती है या किस परिवार में कौन-सा विवाद चल रहा है-इन बातों को इधर से उधर पहुंचाने वाले व्यक्ति को आमतौर पर कोई बहुत सम्मान की नजर से नहीं देखता। लेकिन कोलंबिया से सामने आई एक वायरल कहानी ने चुगली को ही कमाई का जरिया बना दिया।

दावा है कि क्विंडियो क्षेत्र की 67 वर्षीय Myriam नाम की महिला ने वर्षों तक अपने आसपास रहने वाले लोगों की निजी जिंदगी से जुड़ी बातें नोट करनी शुरू कीं। कौन किससे नाराज है, किसके परिवार में क्या विवाद चल रहा है, किसके रिश्तों में क्या चल रहा है और मोहल्ले में कौन-सी नई बात सामने आई है-वह इन सबका रिकॉर्ड रखने लगी। धीरे-धीरे उनकी यह आदत एक तरह की गॉसिप नोटबुक में बदल गई। अब इसी के जरिये उसने इतनी कमाई कर ली है कि अपने नाम पर दो घर खरीद लिए हैं। Myriam ने इन जानकारियों को मुफ्त में बताने के बजाय उनके लिए पैसे लेने शुरू कर दिए। जिस व्यक्ति को मोहल्ले में चल रही किसी खास बात की जानकारी चाहिए होती, वह कथित तौर पर Myriam से संपर्क करता और जानकारी के बदले पैसे देता। दावा है कि हर खबर की कीमत एक जैसी नहीं होती थी। अगर मामला ज्यादा दिलचस्प या सनसनीखेज होता, तो उसकी कीमत भी ज्यादा हो जाती थी। वायरल कहानी के मुताबिक, इस अनोखे काम से इतनी कमाई हुई कि Myriam ने अपना सपना पूरा करते हुए घर खरीद लिया। इसके बाद कथित तौर पर कमाई जारी रही और उन्होंने दूसरा घर भी खरीद लिया। यानी जिस काम को आमतौर पर लोग सिर्फ मोहल्ले की चुगली कहते हैं, उसी को इस महिला ने कथित तौर पर एक बिजनेस मॉडल में बदल दिया। कहा जाता है कि Myriam ने अपने आसपास होने वाली घटनाओं को लंबे समय तक चुपचाप नोट करना शुरू किया था। मोहल्ले में रहने वाले लोगों की जिंदगी में रोजाना कुछ ना कुछ होता रहता है। कहीं पति-पत्नी के बीच झगड़ा, कहीं पड़ोसियों में विवाद, कहीं किसी रिश्ते को लेकर चर्चा तो कहीं परिवार के अंदर चल रही कोई परेशानी। अधिकांश लोग ऐसी बातें सुनते हैं और कुछ समय बाद भूल जाते हैं। लेकिन Myriam कथित तौर पर इन घटनाओं को याद रखने और लिखने लगीं। धीरे-धीरे उनके पास ऐसी जानकारियों का संग्रह तैयार हो गया, जिसके बारे में आसपास के लोग खुद भी उत्सुक रहने लगे।

ममता के विरोध में लगे नारे को लेकर गरमाई सियासत

» पूर्व सीएम ने इसे भाजपा की साजिश बताया

» अशांति फैलाना चाह रही थी टीएमसी : भाजपा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में नई सरकार बने तीन महीने से ज्यादा होने को है पर वहा भाजपा व टीएमसी में सियासी वार-पलटवार जारी है। अब ममला पूर्व सीएम के विरोध में लगे नारे को लेकर है। जिससे राज्य सियासत गरमा गईहै। बता दे पश्चिम बंगाल के बिजपुर में टीएमसी के एक दिवंगत कार्यकर्ता के परिवार से मिलने जा रही पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के काफिले का भारी विरोध हुआ।

प्रदर्शनकारियों ने उनके खिलाफ चोर-चोर के नारे लगाए और उनकी गाड़ी पर कीचड़, पत्थर व जूते फेंके। ममता बनर्जी ने इस पूरी घटना को बीजेपी की एक सोची-समझी साजिश बताया, जबकि प्रदर्शनकारियों का कहना था कि वह इलाके में अशांति फैलाने आई थीं। इस घटना के बाद से राज्य का राजनीतिक माहौल काफी गरमा गया है।

कीचड़ या चप्पल फेंकना हमारी संस्कृति नहीं : अग्निमित्रा पॉल

ममता बनर्जी की गाड़ी पर हुए हमले पर प्रतिक्रिया देते हुए राज्य मंत्री और बीजेपी नेता अग्निमित्रा पॉल ने कहा, हमारी पार्टी या सरकार मारपीट, बदसलूकी, या किसी पर कीचड़ और जूते फेंकने जैसी हरकतों का कभी समर्थन नहीं करती। यह बीजेपी की संस्कृति का हिस्सा नहीं है। ममता बनर्जी ने भले ही अपने शासनकाल में गलतियां की हों, लेकिन एक बुज़ुर्ग महिला नेता के साथ ऐसा व्यवहार बिल्कुल गलत है। अगर कोई बीजेपी का नाम लेकर ऐसा कर रहा है, तो वह सरासर गलत है।

घटना से बीजेपी का कोई लेना-देना नहीं : सामिक

बीजेपी के राज्य अध्यक्ष सामिक भट्टाचार्य ने इस मामले पर पार्टी का पक्ष रखते हुए कहा कि ममता बनर्जी की गाड़ी पर पत्थर या चप्पल फेंकने की घटना से बीजेपी का कोई लेना-देना नहीं है। इसमें पार्टी का कोई कार्यकर्ता शामिल नहीं है। उन्होंने कहा, हम पूर्व महिला मुख्यमंत्री के साथ ऐसे व्यवहार की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं, क्योंकि इससे राज्य की छवि खराब होती है। सामिक भट्टाचार्य ने आगे कहा कि तृणमूल कांग्रेस को इस मामले में बीजेपी पर आरोप लगाने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि बिजपुर में जो कुछ भी हुआ, वह जनता का तृणमूल कांग्रेस के प्रति गुस्सा और टकराव है। उन्होंने कहा कि बीजेपी किसी भी नेता की गाड़ी पर हमला करने का समर्थन नहीं करती और पुलिस को इस मामले में उचित कार्रवाई करनी चाहिए, लेकिन तृणमूल को भी अपने पिछले अत्याचारों पर आत्ममंथन करना चाहिए।

विपक्ष को डराने का प्रयास कर रही बीजेपी : गहलोत

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने रविवार को उत्तर 24 परगना में पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के काफिले पर कथित हमले की निंदा की और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर राज्य में "अराजकता और भय" का माहौल पैदा करने का आरोप लगाया। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत ने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस के एक कार्यकर्ता के परिवार से मिलने जा रहीं बनर्जी के वाहन पर पत्थर, कीचड़ और जूते फेंके गए तथा पुलिस की मौजूदगी में नारेबाजी की गई। गहलोत ने एक बयान में कहा, भाजपा के शासन ने अराजकता और भय का माहौल पैदा कर दिया है।

दीक्षांत समारोह में सीजेआई सूर्यकांत को बुलाने पर छात्रों का विरोध

» विवि से फैसला बदलने की उठाई मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नालसर। नालसर के 450 से ज़्यादा छात्रों ने यूनिवर्सिटी से सीजेआई सूर्यकांत को दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाने के फैसले पर फिर से विचार करने की अपील की. नालसर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ के 450 से ज़्यादा छात्रों ने एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इसमें यूनिवर्सिटी प्रशासन से अपील की गई है कि वे इस साल के दीक्षांत समारोह में भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत को मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाने के फ़ैसले पर फिर से विचार करें। वाइस-चांसलर, रजिस्ट्रार और प्रोफेसरों को लिखे गए इस पत्र में कहा गया है कि भले ही दीक्षांत समारोह की तारीख़ और मुख्य अतिथि के नाम को अभी तक आधिकारिक तौर पर तय नहीं किया गया है, लेकिन छात्र कोई भी फ़ैसला होने से पहले अपनी चिंताएं जाहिर करना चाहते थे।

छात्रों का कहना है कि उन्हें जस्टिस के उस हालिया रवैये पर आपत्ति है, जो उन्होंने 20 जुलाई को जंतर-मंतर पर 'चलो संसद' प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की कार्रवाई से जुड़ी सुनवाई के दौरान दिखाया था। उन्होंने उन रिपोर्टों का जिक्र किया, जिनमें कहा गया है कि 23 जुलाई को हुई सुनवाई के दौरान, सीजेआई ने पुलिस की ज्यादती दिखाने वाले वीडियो सबूत देखने से इनकार कर दिया था। उन्होंने कहा था, हमें वीडियो में कोई दिलचस्पी नहीं है। हमारे पास उन्हें देखने का समय नहीं है, और बाद में याचिकाकर्ता के वकील की दलीलों को बीच में ही रोक दिया था।

भाजपा सांसद जनार्दन मिश्रा के बिगड़े बोल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भाजपा के सांसद जनार्दन मिश्रा ने इथेनॉल ब्लेंडिंग पॉलिसी को लेकर केंद्र सरकार का बचाव करते हुए विपक्षी पार्टियों से पूछा कि क्या शुद्ध पेट्रोल उनके पिता के घर से आएगा, जिससे भारी विवाद खड़ा हो गया है। कांग्रेस ने सांसद पर निशाना साधा है। बिहार कांग्रेस के प्रवक्ता असित नाथ तिवारी ने कहा कि ना हमने और ना हमारे बाप ने कभी वादा किया था कि हमारी सरकार आई तो 35 रुपये पेट्रोल देंगे। उन्होंने कहा यह सरकार पेट्रोल के नाम पर देश को लूट रही है। असित नाथ ने कहा कि जिनके बाप ने कहा था उनसे शुद्ध पेट्रोल मांगना चाहिए।

केंद्र का बचाव करते हुए और अमेरिका और ईरान के बीच संघर्ष के कारण चल रही वैश्विक उथल-पुथल का हवाला देते हुए, मिश्रा ने बताया कि भारत केवल 20 प्रतिशत कच्चा तेल पैदा करता है, जबकि बाकी 80 प्रतिशत आयात किया जाता है। उन्होंने दावा किया कि तेल की आपूर्ति के लिए जहाज लगभग 18,000 किलोमीटर की अतिरिक्त दूरी तय करते हैं। मिश्रा ने कहा एक अभियान चल रहा है जिसमें दावा किया जा रहा है कि इथेनॉल काम नहीं करेगा, शुद्ध पेट्रोल ही काम करेगा। क्या शुद्ध पेट्रोल आपके पिता के घर से आएगा? अगर देश में शुद्ध पेट्रोल नहीं है, तो यह कहां से आएगा? बीजेपी के लोकसभा सांसद ने कहा कि भारत में गाड़ियां इथेनॉल ब्लेंडिंग पर चल सकती हैं। उन्होंने दावा किया कि ब्राज़ील में गाड़ियां पूरी तरह से 10 प्रतिशत इथेनॉल पर चलती हैं और उन्हें कोई दिक्कत नहीं होती। उन्होंने कहा कि अगर इथेनॉल नहीं बनेगा, तो पेट्रोल और डीज़ल कहाँ से आएगा? ब्राज़ील दुनिया में सबसे ज़्यादा इथेनॉल बनाता है, इसीलिए वहाँ गाड़ियाँ 10 प्रतिशत इथेनॉल पर चलती हैं। कांग्रेस ने बार-बार सरकार पर निशाना साधा है और कहा है कि इस पॉलिसी से सिर्फ़ इथेनॉल बनाने वालों को फ़ायदा हो रहा है और मध्यम वर्गीय भारतीयों से चुनने का विकल्प छीना जा रहा है।

विस का मानसून सत्र और बढ़ाया जाए: खैरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब विधानसभा के मानसून सत्र का आज अंतिम दिन है। सरकार आज आठ महत्वपूर्ण विधेयक पेश कर सकती है। इनमें तीन नई डिजिटल ओपन यूनिवर्सिटी स्थापित करने से जुड़े विधेयक भी शामिल हैं। वहीं विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष प्रताप बाजवा एवं कांग्रेस के विधायकों ने परिसर में प्रदर्शन किया। विपक्ष ने विधेयकों पर चर्चा के लिए सदन का समय बढ़ाने की मांग की है। कांग्रेस विधायक सुखपाल सिंह खैरा ने कहा कि एक दिन इन विधेयकों पर चर्चा के लिए पर्याप्त नहीं है। ऐसे में सदन के हंगामेदार रहने के आसार हैं।

सरकार की ओर से क्लाउड यूनिवर्सिटी होशियारपुर विधेयक-26, एमएस डिजिटल यूनिवर्सिटी पटियाला विधेयक-26 और फिजिक्सवाला डिजिटल यूनिवर्सिटी पटियाला विधेयक-26 पेश किए जा सकते हैं। इसके अलावा रेगुलेशन एंड मेंटेनेंस

संशोधन विधेयक-26 भी सदन में लाया जा सकता है। इसके जरिये राज्य के औद्योगिक क्षेत्रों के बेहतर प्रबंधन के लिए गठित एसपीवी की प्रभावशीलता, पारदर्शिता और वित्तीय स्थिरता मजबूत करने का प्रावधान है। पंजाब वस्तु एवं सेवा कर (संशोधन) विधेयक-26 में बिक्री के बाद दी जाने वाली छूट को पूर्व समझौते की शर्त के बिना क्रेडिट नोट जारी कर आपूर्ति की कीमत से बाहर रखने की अनुमति देने का प्रावधान है। पंजाब

» अंतिम दिन आठ बिल पेश करेगी सरकार, कांग्रेस विधायकों ने किया प्रदर्शन

स्टेट आउटसोर्स्ड ट्रांजिशन टू कॉन्ट्रैक्चुअल एंगेजमेंट विधेयक-26 में जोखिम वाली श्रेणियों में तैनात कर्मचारियों को तीन साल की सेवा पूरी होने के बाद सीधे अनुबंध पर लाने की तैयारी है। इसके अलावा पंचायती राज संशोधन विधेयक-2026 और बिना सहायता वाले निजी स्कूलों में फीस से जुड़ा विधेयक भी पेश किया जा सकता है। खैरा ने विधानसभा अध्यक्ष से सदन का समय कुछ दिन बढ़ाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि विधेयकों को पढ़ने और उन पर विस्तृत चर्चा के लिए पर्याप्त समय चाहिए। सोमवार को सदन का आखिरी दिन हो सकता है। ऐसे में इन विधेयकों पर गंभीर चर्चा संभव नहीं होगी जबकि इनका सीधा संबंध आम लोगों से है।

मानसून सत्र में सैनी सरकार को घेरेगी कांग्रेस : हुड्डा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। भूपेंद्र हुड्डा के आवास पर शाम पांच बजे होने वाली बैठक में विधानसभा के आगामी मानसून सत्र को लेकर पार्टी की रणनीति पर चर्चा की जाएगी। बैठक में प्रदेश की मौजूदा राजनीतिक स्थिति, सरकार को घेरने के मुद्दों और सदन में उठाए जाने वाले जनहित से जुड़े विषयों पर भी मंथन होने की संभावना है। बैठक में कांग्रेस के पांच निलंबित विधायकों को आमंत्रित नहीं किया गया है।

ऐसे में विधायक दल की बैठक को पार्टी के भीतर चल रही गतिविधियों के लिहाज से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उधर, सोनीपत में कांग्रेस नेताओं और पदाधिकारियों की लगातार बैठकें चल रही हैं। इन बैठकों में भी विधानसभा सत्र की तैयारियों और सदन में सरकार को घेरने की रणनीति पर विचार-विमर्श किया जा रहा है। कांग्रेस विभिन्न विभागों से जुड़े मुद्दों, जनसमस्याओं और सरकार के फैसलों को विधानसभा में प्रमुखता से उठाने की तैयारी कर रही है।

सुदर्शन की जगह सरफराज की टीम इंडिया में एंट्री

» श्रीलंका सीरीज से पहले साई चोट के कारण पूरी सीरीज से बाहर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलंबो। भारतीय टीम को श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज से पहले बड़ा झटका लगा है। बाएं हाथ के बल्लेबाज साई सुदर्शन चोट के कारण पूरी सीरीज से बाहर हो गए हैं। उनकी जगह चयन समिति ने सरफराज खान को भारतीय टेस्ट टीम में शामिल किया है।

साई सुदर्शन फिलहाल बंगलूरू स्थित बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) में हैं और दाहिने पैर के अंगूठे में आई स्ट्रेस रिएक्शन की चोट से उबर रहे हैं। बीसीसीआई के मुताबिक, उनकी रिकवरी अच्छी तरह आगे बढ़ रही है और उन्होंने फिटनेस हासिल करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हालांकि, मेडिकल टीम उनकी स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है। इससे पहले इस सीरीज से बुमराह पहले ही चोट के चलते बाहर हो चुके हैं। साई सुदर्शन की जगह सरफराज खान को दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम में शामिल किया गया है। सरफराज जल्द ही कोलंबो में भारतीय टीम से जुड़ेंगे। इसके बाद टीम पहले टेस्ट के लिए गाले रवाना होगी। भारत और श्रीलंका के बीच सीरीज का पहला टेस्ट 15 अगस्त 2026 से गाले में खेला जाएगा। सरफराज के लिए यह टीम में वापसी का अहम मौका है। वह घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं और टेस्ट टीम के साथ पहले भी रह चुके हैं।

वेस्टइंडीज पर फिर मंडराया विश्व कप क्वालिफायर का खतरा

नई दिल्ली। वेस्टइंडीज एक बार फिर वनडे विश्व कप के लिए सीधे क्वालिफाई करने से चूक गया है। दो बार की विश्व चैंपियन टीम अब 2027 वनडे विश्वकप में जगह बनाने के लिए क्वालिफायर के रास्ते पर जाने की कगार पर है। लगातार तीसरे विश्व कप चक्र में वेस्टइंडीज को सीधे क्वालिफिकेशन की दौड़ से बाहर होना पड़ा है, जो 50 ओवर के क्रिकेट में टीम के लगातार गिरते प्रदर्शन को दर्शाता है। वेस्टइंडीज की मुश्किलें अफगानिस्तान की आयरलैंड के खिलाफ मौजूदा पांच मैचों की वनडे सीरीज के दूसरे मुकाबले में जीत के बाद और बढ़ गईं।अफगानिस्तान की इस जीत ने सीधे क्वालिफिकेशन की दौड़ में उसकी स्थिति मजबूत कर दी और वेस्टइंडीज के लिए शीर्ष आठ में पहुंचने का बचा हुआ एक रास्ता भी लगभग बंद हो गया। 2027 वनडे विश्व कप की मेजबानी दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे के साथ नामीबिया करेगा, और सह-मेजबान होने के कारण दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे को सीधे प्रवेश मिलेगा। इनके अलावा आठ टीमों को सीधे क्वालिफिकेशन के लिए रैंकिंग की कटऑफ तारीख 30 सितंबर 2026 है। न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे सीरीज के बाद वेस्टइंडीज 73 अंकों के साथ 10वें स्थान पर था।

मानसून सत्र के तीसरे हफ्ते भी हंगामा ही हंगामा

चढ़ावा चोरी और प्रदर्शनकारी छात्रों पर पुलिस कार्रवाई के मुद्दों पर विपक्ष का हल्लाबोल

विपक्ष के हंगामे के बीच सरकार ने पेश किए चार बिल, कार्यवाही हुई स्थगित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मानसून सत्र के तीसरे सप्ताह के पहले दिन भी संसद के दोनों हंगामा जारी रहा। राम मंदिर में कथित चढ़ावा चोरी और प्रदर्शनकारी छात्रों पर पुलिस कार्रवाई के मुद्दों पर विपक्षी दलों के सदस्यों के हंगामे के कारण सोमवार को लोकसभा की कार्यवाही एक बार के स्थगन के बाद अपराह्न दो बजे तक स्थगित कर दी गई।

वहीं विपक्ष के हंगामे के बीच ही सरकार ने न्यायाधिकरण सुधार विधेयक, 26, खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) संशोधन विधेयक, 26, केरल (नाम परिवर्तन) विधेयक, 026, और राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (संशोधन) विधेयक, 026 पेश किए। संसद के मानसून सत्र के चौथे सप्ताह की शुरुआत भी पिछले तीन सप्ताह की तरह ही हंगामेदार रही।

कार्यवाही 11 बजे शुरू होते ही कांग्रेस और समाजवादी पार्टी समेत विपक्षी दलों के सदस्य अयोध्या के राम मंदिर में कथित चढ़ावा चोरी के विरोध में और दिल्ली में प्रदर्शनकारी छात्रों पर पुलिस कार्रवाई के मुद्दे पर गृह मंत्री अमित शाह के बयान की मांग को लेकर शोर-शराबा करने लगे। आसन पर आज आरएसपी नेता एन के प्रेमचंद्रन थे जिन्होंने प्रश्नकाल शुरू कराने का प्रयास किया। सामान्य तौर पर लोकसभा में प्रश्नकाल की कार्यवाही के समय आसन पर अध्यक्ष ओम बिरला होते हैं। हंगामा जारी रहने पर प्रेमचंद्रन ने बैठक शुरू होने के एक मिनट के अंदर दोपहर 12 बजे तक स्थगित कर दी। सदन की कार्यवाही फिर से आरंभ होने पर विपक्षी सदस्य नारेबाजी करने लगे। हंगामे के बीच ही पीठासीन सभापति संध्या राय ने आवश्यक कागजात सदन के पटल पर रखवाए।

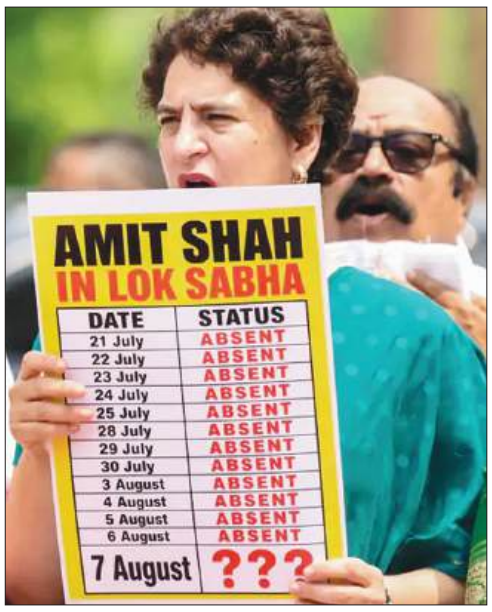

कई मंत्रियों ने पेश किए विधेयक

विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने न्यायाधिकरण सुधार विधेयक, 26 और कोयला एवं खान मंत्री जी किशन रेड्डी ने खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) संशोधन विधेयक, 2026 हंगामे के बीच ही पेश किए। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने केरल (नाम परिवर्तन) विधेयक, 026 और सहकारिता राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल ने राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (संशोधन) विधेयक, 026 पेश किए। हालांकि, उक्त दोनों विधेयक केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह के नाम से सूचीबद्ध थे।

विपक्ष के सदस्य 'गृह मंत्री कहां हैं' के नारे लगाते रहे

इस दौरान विपक्ष के सदस्य 'गृह मंत्री कहां हैं' कहते सुने गए। पीठासीन सभापति संध्या राय ने विधेयकों को पेश किए जाने का विरोध करने के लिए कुछ विपक्षी सदस्यों के नाम पुकारे, लेकिन विपक्ष की तरफ नारेबाजी जारी रही। हंगामा नहीं थमने पर उन्होंने दोपहर 12 बजकर 14 मिनट पर सदन की बैठक अपराह्न दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी।

दिल्ली विधानसभा में टी-शर्ट पर हंगामा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के मानसून सत्र के दूसरे दिन की कार्यवाही जारी है। आज वित्त वर्ष 024-25 के राज्य वित्त से संबंधित नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी जाएगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता रिपोर्ट पेश करेंगी। विधानसभा में नियम-280 के तहत चर्चा में दिल्ली के विधायकों ने साफ-सफाई का मुद्दा उठाया।

» भाजपा विधायकों की आपत्ति, आप के छह विधायकों मार्शल ने निकाला

सीएजी की एक रिपोर्ट अभी पेश होगी। सदन में तीन बिल आएंगे। वहीं, छह विधायक मार्शल आउट और सदन की कार्यवाही 15 मिनट के लिए स्थगित कर दी गई। जिसके बाद फिर से सदन की कार्यवाही शुरू हुई। विधानसभा में टी-शर्ट पर हंगामा हो गया। विपक्ष के द्वारा पहने गए शर्ट पर बीजेपी विधायकों ने आपत्ति जताई। विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने टी-शर्ट नहीं उतारने पर विधायक संजीव झा, कुलदीप, अजय दत्त, जरनैल सिंह समेत दूसरे विधायक को मार्शल आउट किया। आम आदमी पार्टी ने बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि जो साइकिल आप नेताओं ने 4200 रुपये में खरीदी, उसे सरकार ने 6957 रुपये में खरीदा। दिल्ली सरकार ने 1,30, ०००साइकिल खरीदी। विपक्ष ने इसमें बड़े घोटाले का आरोप लगाया।

अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा मामले में यूपी सरकार ने सुनवाई टालने का किया आग्रह

» पीठ ने अनुरोध पर विचार करने पर सहमति जताई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे के कथित गबन की जांच की मांग वाली याचिकाओं पर सुनवाई टालने का आग्रह किया गया है। उत्तर प्रदेश सरकार के वकील ने सुप्रीम कोर्ट से यह अनुरोध किया। वजह यह बताई गई कि मामले में पेश हो रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता उपलब्ध नहीं हैं।

सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे के कथित गबन की कोर्ट की निगरानी में विशेष जांच दल (एसआईटी) से जांच कराने की मांग वाली याचिकाओं पर सुनवाई टालने के अनुरोध पर विचार करने पर सहमति जताई। सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची तथा जस्टिस वी. मोहन की पीठ को एक वकील ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से पेश हो रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता एक प्रतिनिधिमंडल के साथ संयुक्त राष्ट्र गए हैं। वहां उन्हें एक कार्यक्रम में शामिल होना है। पीठ ने पूछा कि क्या ये मामले सुनवाई के लिए सूचीबद्ध हैं। वकील ने कहा, हां, 30 से 33 नंबर तक...कृपया इसे अगले सप्ताह सुनवाई के लिए ले लीजिए। पीठ ने इस अनुरोध पर विचार करने पर सहमति जताई।

कावेरी जल विवाद, तमिलनाडु की याचिका पर 13 को सुनवाई

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को तमिलनाडु सरकार की उस याचिका पर सुनवाई करने पर सहमति जताई, जिसमें कर्नाटक सरकार को तमिलनाडु के हिस्से का कावेरी नदी का पानी तुरंत छोड़ने का निर्देश देने की मांग की गई है। शीर्ष कोर्ट इस याचिका पर 13 अगस्त को सुनवाई करेगा।

शिवसेना यूबीटी नेता संजय राउत ने पीएम मोदी पर साधा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संसद के मानसून सत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र और अमित शाह की गैरमौजूदगी पर विपक्षी दल लगातार सवाल उठा रहे हैं। इसी क्रम में उद्धव ठाकरे गुट के राज्यसभा सांसद संजय राउत ने भी पीएम मोदी और अमित शाह पर निशाना साधते हुए सोशल मिडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया है।

संजय राउत ने तंजिया लहजे में लिखा, आओ न, डरो मत, राहुल गांधी अच्छा इंसान हैं कुछ नहीं करेंगे। बस थोड़ी सी धुलाई करेंगे। संजय राउत ने पोस्ट में लिखा, आप 56 इंच वाले हो, मालूम है, एक बार अंदर आकर तो देखो, डरो मत, राहुल गांधी अच्छे संस्कारी इंसान हैं, वो आपको कुछ नही करेंग, केवल थोड़ी सी धुलाई करेंगे, इतना तो हक बनता ही है, शिवसेना यूबीटी सांसद ने आगे लिखा, राहुल संसद के दरवाजे पर खड़े हैं। छुपके मत देखो आओ भाई, आईए।

रांची में छात्रों का 18वें दिन भी प्रदर्शन जारी

» थ्री लेयर्ड बैरिकेडिंग नहीं रोक सकी प्रदर्शनकारियों का रास्ता

» हाईकोर्ट व विस तक पहुंचे छात्र, पुलिस ने पानी डाला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। राजधानी रांची में जेपीएससी व जेएसएससी भर्ती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के खिलाफ चल रहे छात्र आंदोलन के 18वें दिन सोमवार (10 अगस्त) को विधानसभा घेराव के दौरान बड़ा घटनाक्रम सामने आया। जगरनाथपुर सेक्टर-2 के पास पुलिस द्वारा लगाई गई मजबूत बैरिकेडिंग को छात्रों ने पार कर आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

देवेंद्र नाथ महतो एंबुलेंस से विधानसभा के लिए रवाना। विधानसभा घेराव को छात्रों के साथ महतो भी पूरे जोश में सड़क हैं। देवेंद्रनाथ को उनके सहयोगी कंधे पर उठाकर एचईसी स्थित शहीद मैदान पहुंचे। बॉर्डर जैसी कंटीली तारों वाली बैरिकेडिंग भी छात्रों को रोक नहीं सकी। रिपोर्ट्स के अनुसार, प्रदर्शनकारी तीसरी बैरिकेडिंग पार कर झारखंड विधानसभा की ओर बढ़ रहे हैं। भारी पुलिस बल और सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद छात्रों का यह दबाव बढ़ता दिख रहा है। बैरिकेडिंग के पीछे से जगन्नाथपुर मंदिर के रास्ते शॉर्टकट गेट से भी आगे बढ़ रहे छात्र। यही गति रही तो सभी बैरियर टूटना तय है।पुलिस-प्रशासन की ओर से शहीद मैदान से हाई कोर्ट तक कुल आठ बैरिकेडिंग की गई है। पुलिस को झांसा देकर शार्ट कट रास्ते से भी कुछ आंदोलनकारी सात बैरियर फांद कर आगे बढ़ते दिख रहे हैं।

जहां प्रदर्शकारी रोके गए हैं वहां से झारखंड हाई कोर्ट तक कुल पांच बैरिकेडिंग हैं। एक जगन्नाथपुर मंदिर के सामने प्रवेश द्वार के पास है। वहीं तक प्रदर्शकारी आ सकते हैं। दूसरी व तीसरी बैरिकेडिंग मंदिर के समानांतर साईं मंदिर, ऋषभ नगर की तरफ जाने वाले रास्ते के पास है। चौथी बैरिकेडिंग जगन्नाथनगर कॉलेज के सामने और पांचवी बैरिकेडिंग झारखंड हाई कोर्ट के पास है।

भाजपा नेताओं का समर्थन

उधर, भाजपा नेताओं के समर्थन प्रदर्शन के दौरान नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी, प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू सहित कई विधायकों और नेताओं को हिरासत में लिया गया। उन्हें खेलगांव ले जाया जा रहा है। विधानसभा की कार्यवाही शुरू हो चुकी है, लेकिन विपक्ष अनुपस्थित रहा। भूख हड़ताल पर बैठे देवेंद्र नाथ मेहतो एंबुलेंस से विधानसभा के लिए रवाना हुए। एक बैरिकेडिंग टूटा।

सरकारी कार्यक्रमों में तमिल एंथम अनिवार्य : विजय

» तमिलनाडु विधानसभा में प्रस्ताव पेश, डीएमके -एआई डीएमके का समर्थन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने सोमवार को विधानसभा में एक प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव के तहत राज्य भर में सरकारी कार्यक्रमों की शुरुआत में राज्य गीत तमिल थाई वाजथु गाना अनिवार्य कर दिया गया है।

विधानसभा में प्रस्ताव पेश करते हुए विजय ने कहा कि उनकी तमिलगा वेट्री कझगम (टीवीके) सरकार तमिलनाडु के भाषाई और सांस्कृतिक अधिकारों से कोई समझौता नहीं करेगी। उन्होंने विधायकों से इस कदम का समर्थन करने के लिए राजनीतिक मतभेदों को भुलाने की अपील की।

मां की तरह पवित्र है हमारी मातृभाषा : सीएम विजय

विजय ने भावुक भाषण में कहा, हमारी मातृभाषा उतनी ही पवित्र है जितनी हमारी मां। उन्होंने आगे कहा,तमिल सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि हमारा जीवन और हमारी भावनाएं भी है। तमिल का मतलब है गर्व, तमिल का मतलब है शक्ति। उन्होंने कहा, जिस पल आप तमिल कहते हैं, पूरा तमिलनाडु एकजुट होकर एक साथ खड़ा हो जाता है। उन्होंने कहा, तमिलनाडु में तमिल थाई वाजथु को पहला स्थान मिलना चाहिए। तमिल थाई वाजथु को पहला स्थान देना हमारा राज्य का अधिकार है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने सभी पार्टियों के सदस्यों से प्रस्ताव का समर्थन करने की अपील करते हुए कहा, तमिल थाई वाजथु को सबसे पहले गाया जाना चाहिए, इस बात को लेकर कोई राजनीतिक बहस नहीं होनी चाहिए। इस प्रस्ताव के तहत, तमिलनाडु में शिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों, सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और अन्य सार्वजनिक संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सबसे पहले तमिल थाई वाजथु गाया जाएगा। इस प्रस्ताव को डीएमके और एआईएडीएमके दोनों दलों के विधायकों का समर्थन मिला। सदस्यों ने सरकारी कार्यक्रमों में राज्य गीत गाना अनिवार्य करने के सरकार के कदम का समर्थन किया।

केंद्रीय गृह मंत्रालय की सलाह के बाद उठाया कदम

यह कदम केंद्रीय गृह मंत्रालय की हालिया सलाह के बीच उठाया गया है, जिसमें राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से सरकारी कार्यक्रमों में राष्ट्रगान से पहले वंदे मातरम् बजाने के 28 जनवरी के निर्देश का पालन करने को कहा गया था। यह कदम गृह मंत्रालय के 9 जुलाई के उस निर्देश की पृष्ठभूमि में भी उठाया गया है जिसमें सरकारी कार्यक्रमों में राज्य गीत गाने के बारे में बात कही गई थी।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा